

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ ءَامَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ
 بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾ يُخَدِّعُونَ اللّٰهَ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا وَمَا يُخَدِّعُونَ
 إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ
 مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ ﴿١٠﴾ وَإِذَا قِيلَ
 لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾ أَلَا
 إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ
 ءَامِنُوا كَمَا ءَامَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا ءَامَنَ السُّفَهَاءُ
 أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾ وَإِذَا لَقُوا
 الَّذِينَ ءَامَنُوا قَالُوا ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا
 مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ﴿١٤﴾ اللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ
 وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٥﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا
 الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ
 ﴿١٦﴾ مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا
 حَوْلَهُ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَّا
 يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾ صُمُّ بُكْمٌ عُمَىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾ أَوْ
 كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ
 أَصْبَعَهُمْ فِيْٓ ءَاذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللّٰهُ
 مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾ يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا

أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ
لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَرِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

Theme	
Hypocrites and consequences of hypocrisy. Examples of their deeds.	मुनाफ़िकों और निफ़ाक़ के अंजाम। उनके आमाल की मिसालें।
Tarjuman	
There are some people who say: "We believe in Allah and the Last Day;" yet, they are not true believers. They try to deceive Allah and the believers. However, they deceive none except themselves; yet, they do not realize it. In their hearts is a disease (of hypocrisy, and because of their misbehaviour) Allah has increased their disease and they shall have a painful punishment for the lies they have told. When it is said to them: "Do not make mischief on earth," they say: "We Beware! They are the ones make peace." who make mischief but they do not realize it. When they are told: "Believe	बाज लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं की हम अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाए हैं, हालाँकि दरहकीकत वे मोमिन नहीं हैं। वे अल्लाह और ईमान लनेवालों के साथ धोखेबाजी कर रहे हैं, मगर दरअस्त वे खुद अपने आप ही को धोके में डाल रहे हैं और उन्हें इसका शुऊर नहीं है। उनके दिलों में एक बीमारी है जिसे अल्लाह ने और ज्यादा बढ़ा दिया, और जो झूठ वे बोलते हैं, उसकी पादाश में उनके लिए दर्दनाक सजा है। जब कभी उनसे कहा गया कि जमीन में फसाद बरपा न करो, तो उन्होंने यही कहा कि "हम तो इस्लाह करनेवाले हैं।"--- खबरदार, हक़ीकत में यही लोग मुफ़सिद हैं मगर इन्हें शुऊर नहीं है। और जब इनसे कहा गया कि जिस

as the others believe," they sarcastically ask: "Should we believe like fools?" Be aware! They themselves are the When fools, if only they could understand. they meet the believers they say: "We are believers," but when they are alone with their shaitans, they say: "We are really with you; we were only mocking the believers." Allah will throw back their mockery on them and leave them alone in their trespasses, so they wander to and fro like the blind. These are the people who barter guidance for error: but their bargain is profitless and they are not going to be guided. Their example is that of a man who kindled a fire; when it illuminated all around him Allah took away their light (their eyesight) and left them in utter darkness: they could see nothing. Deaf, dumb, and blind, they will never return to the Right Way. Or another example is that of a dark storm-cloud in the sky charged with	तरह दूसरे लोग ईमान लाए हैं उसी तरह तुम भी ईमान लाओ तो उन्होंने यही जवाब दिया कि "क्या हम बेवकूफों कि तरह ईमान लाएँ?"----- खबरदार, हकीकत में तो ये खुद बेवकूफ हैं, मगर ये जानते नहीं हैं । जब ये अहले-ईमान से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब अलाहिदगी में अपने शैतानों से मिलते हैं, तो कहते हैं कि अस्ल में तो हम तुम्हारे साथ हैं और इन लोगों से महज़ मज़ाक कर रहे हैं--- अल्लाह इनसे मज़ाक कर रहा है, वह इनकी रस्सी दराज़ किए जाता है, और ये अपनी सरकशी में अंधों की तरह भटकते चले जाते हैं । ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही खरीद ली है, मगर यह सौदा इनके लिए नफाबख्श नहीं है और ये हरगिज़ सही रास्ते पर नहीं हैं । इनकी मिसाल ऐसी है जैसे -- एक शख्स ने आग रौशन की और जब उसने सारे माहौल को रौशन कर दिया तो अल्लाह ने इनका नूरे-बसारत सल्ब कर लिया और इन्हें इस हाल में छोड़ दिया कि तारीकियों में इन्हें कुछ नज़र नहीं आता । ये बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं, ये सब न पलटेंगे । या फिर इनकी मिसाल यूँ समझो कि
--	--

thunder and lightning. They press their fingers to their ears at the sound of each stunning thunderclap for fear of death: Allah is encircling the unbelievers from all sides. The lightning terrifies them as if it was going to snatch away their eyesight; whenever it flashes they walk on; when it becomes dark, they stand still. And if Allah wanted He could have taken away their hearing and their sight; for Allah has power over everything.	आसमान से ज़ोर की बारिश हो रही है और उनके साथ अँधेरी घटा और कड़क और चमक भी है, ये बिजली के कड़के सुनकर अपनी जानों के खौफ़ से कानों में ऊँगलियाँ ठूँसे लेते हैं और अल्लाह इन मुनकिरीने-हक़ को हर तरफ़ से घेरे में लिए हुए है। चमक से इनकी हालत यह हो रही है कि गोया अनकरीब बिजली इनकी बसारात उचक ले जायेगी। जब जरा कुछ रौशनी इन्हें महसूस होती है तो उसमें कुछ दूर चल लेते हैं और जब इनपर अँधेरा छा जाता है तो खड़े हो जाते हैं – अल्लाह चाहता तो इनकी समाअत और बसारात बिलकुल ही सल्ब कर लेता, यक़ीनन वह हर चीज़ पर क़ादिर है।
---	---

Tafsir

Among the people there are some who say, 'We believe in Allah and the Last Day,' when they do not believe. [2:8]	लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं: "हम अल्लाह और यौम-ए-आख़िरत पर ईमान लाए हैं", हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं। [2:8]
Ibn Jurayj related that Mujahid said, 'Four āyahs were revealed in Sūrat al-Baqarah about the believers, two about the unbelievers, and thirteen about	इब्र जुरीज ने रिवायत किया है कि मुजाहिद ने फ़रमाया: "सूरह बक़रह में चार आयतें मोमिनों के बारे में, दो आयतें काफ़िरों के बारे

the hypocrites. As-Suddi said that ‘people’ here refers to the hypocrites.’ Sufi scholars say that the word ‘people’ is a generic noun and one does not use the generic to address friends.	में, और तेरह आयतें मुनाफ़िक़ों के बारे में नाज़िल हुई हैं।" अस-सुद्दी ने कहा कि यहाँ "लोगों" से मुराद मुनाफ़िक़ हैं। सूफ़ी उलेमा कहते हैं कि "लोग" (अन-नास) एक आम इस्म (संज्ञा) है, और दोस्तों या अपने करीबी और महबूब लोगों को मुखातिब करने के लिए आम इस्म का इस्तेमाल नहीं किया जाता।
Grammarians disagree about the derivation of the word ‘people’ (an-nās). It is said that it is the plural of insān (human being). In this case the word nās comes from naws, which means movement. The word is used to mean moving about and it is found with that meaning in hadith. It is also said that the word comes from the word ‘forget’ (nasi), in which case its root would be nasiya. Ibn ‘Abbās said, ‘Adam forgot (nasiya) the covenant with his Lord and so was named insān.’ He ﷺ said, ‘Adam forgot and so his descendants forgot.’ This is	नहवियीन (इल्म-ए-नह्व के माहिरीन) "अन-नास" (लोग) के लफ़्ज़ की अस्ल (इश्तिक्काक़) के बारे में इख़्तिलाफ़ रखते हैं। एक क़ौल यह है कि "अन-नास", "इन्सान" की जमअ (बहुवचन) है। इस सूरत में "नास" का माख़ज़ "नौस" है, जिसका मअनी हरकत करना और इधर-उधर चलना-फिरना है। यह लफ़्ज़ इसी मअनी में इस्तेमाल होता है, और अहादीस में भी इस मफ़हूम के साथ आया है। एक दूसरा क़ौल यह है कि "नास" का माख़ज़ "नसिया" (भूल जाना) है, और इसकी अस्ल "निसयान" (भूल) से है। हज़रत इब्न-ए-अब्बास रज़ियल्लाहु

borne out in the Qur'an when Allah says: <i>'We made a contract with Adam before, but he forgot.'</i>	अन्हु ने फ़रमाया: "हज़रत आदम अलैहिस्सलाम अपने रब के अहद को भूल गए (नसिया), इसी वजह से उनका नाम इन्सान रखा गया।" नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: "आदम भूल गए, लिहाज़ा उनकी औलाद भी भूल गई।" इसकी ताईद कुरआन-ए-करीम में भी होती है, जहाँ अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और हमने इससे पहले आदम से अहद लिया था, मगर वह भूल गए।"
Allah Almighty mentions the believers first because of their nobility and excellence. Then He mentions the unbelievers next because... disbelief and belief are two opposites. Then after that He mentions the hypocrites and connects them to the unbelievers to deny that they have faith with the words, <i>'They do not believe.'</i> This refutes the Karramite thesis that faith is confirmed by affirmation of it on the tongue	अल्लाह तआला ने सबसे पहले मोमिनों का ज़िक्र किया, क्योंकि वे शरफ़ और फ़ज़ीलत वाले हैं। फिर उसके बाद काफ़िरों का ज़िक्र फ़रमाया, क्योंकि ईमान और कुफ़्र एक-दूसरे की ज़िद (विपरीत) हैं। इसके बाद मुनाफ़िकों का ज़िक्र किया और उन्हें काफ़िरों के साथ मिलाकर बयान किया, ताकि यह वाज़ेह कर दिया जाए कि उनके अंदर हक़ीक़ी ईमान मौजूद नहीं है। इसी लिए फ़रमाया:

even if the heart does not believe. Their evidence is the words of Allah: <i>'Allah will reward them for what they say.'</i> He does not say 'for what they say and their belief in it.' They also used as evidence the words of the Prophet ﷺ, 'I was commanded to fight people until they say, "There is no god but Allah." When they have said it, their blood and property are protected from me.'	"वे ईमान नहीं रखते।" यह आयत करमिय्या के उस नज़रिये की तर्दीद करती है कि अगर कोई व्यक्ति ज़बान से ईमान का इक़्रार कर ले तो वह मोमिन शुमार होगा, चाहे उसका दिल उस पर ईमान न रखता हो। करमिय्या अपने मौक्किफ़ के हक्क में अल्लाह तआला के इस फ़रमान से इस्तिदलाल करते हैं: "अल्लाह उन्हें उनके कहने की वजह से अज़्र देगा।" उनका कहना है कि अल्लाह तआला ने यह नहीं फ़रमाया कि: "उनके कहने और उस पर ईमान रखने की वजह से" बल्कि सिर्फ़ उनके क़ौल (कहने) का ज़िक्र किया है। इसी तरह वे नबी करीम ﷺ के इस फ़रमान से भी दलील लेते हैं: "मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से उस वक़्त तक क़िताल करूँ जब तक वे यह न कह दें: 'अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।' जब वे यह कह दें तो उनका ख़ून और उनका
---	---

	माल मुझसे महफूज़ हो जाता है।"
This is wrong and fails to look into what the Qur'an and Sunna actually say about acting by both statement and belief. The Messenger of Allah ﷺ said, 'Faith is recognition in the heart, articulation by the tongue and acting according to the pillars.' Ibn Mājah transmitted it in the <i>Sunan</i>. That which Muḥammad ibn Karrām as-Sijistānī and his people state is hypocrisy and schism. We seek refuge with Allah from disappointment and corrupted belief!	यह बात दुरुस्त नहीं है, क्योंकि यह कुरआन व सुन्नत की उन तसरीहात को नज़रअंदाज़ करती है जिनसे मालूम होता है कि ईमान सिर्फ़ ज़बानी इकरार का नाम नहीं, बल्कि क़ौल और एतिक़ाद दोनों का मजमूआ है। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "ईमान दिल से पहचानने (तस्दीक़ करने), ज़बान से इकरार करने, और अरकान-ए-दीन के मुताबिक़ अमल करने का नाम है।" इस हदीस को इमाम इब्न माजह ने अपनी सुन्न में रिवायत किया है। मुहम्मद बिन कर्राम अस-सिजिस्तानी और उनके पैरौकार जो अकीदा बयान करते हैं, वह दरअसल निफ़ाक़ और गुमराही है। हम अल्लाह तआला की पनाह चाहते हैं नाकामी, महरूमी और फ़ासिद अकीदे से।
Our scholars say that there are two types of believer: a believer whom Allah loves and protects and a believer whom	हमारे उलेमा कहते हैं कि मोमिन दो क़िस्म के होते हैं: 1. एक वह मोमिन जिससे अल्लाह मुहब्बत करता है

Allah loves and does not protect, but with whom He is angry and towards whom He is hostile. Allah loves and protects all those whom He knows will end up as believers. Allah hates and is angry with and hostile towards all those whom He knows will end up as unbelievers – not, of course, on account of their belief but because of the disbelief and misguidance which will overpower them. Likewise there are two types of unbeliever: an unbeliever who will be punished and an unbeliever who will not be punished. The one who will be punished is the one who ends up with disbelief and so Allah is angry with him and hostile towards him. The one who will not be punished is the one who ends up with belief: Allah is not angry with this one nor does he hate him. He loves him and protects him, not for his disbelief, but for the belief which will overtake him.	और उसकी हिफ़ाज़त भी फ़रमाता है। 2. दूसरा वह मोमिन जिससे अल्लाह मुहब्बत तो करता है, लेकिन उसे अपनी हिफ़ाज़त में नहीं लेता, बल्कि उस पर नाराज़ होता है और उसके साथ सख्ती का मामला फ़रमाता है। अल्लाह तआला हर उस शख्स से मुहब्बत करता है और उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है जिसके बारे में वह जानता है कि उसका ख़ातिमा ईमान पर होगा। और अल्लाह तआला हर उस शख्स से नफ़रत करता है, उस पर ग़ज़ब फ़रमाता है और उससे दुश्मनी रखता है जिसके बारे में वह जानता है कि उसका अंजाम कुफ़्र पर होगा। अलबत्ता यह नफ़रत और ग़ज़ब उसके मौजूदा ईमान की वजह से नहीं, बल्कि उस कुफ़्र और गुमराही की वजह से है जो आख़िरकार उस पर ग़ालिब आ जाएगी। इसी तरह काफ़िर भी दो क्रिस्म के होते हैं: 1. एक वह काफ़िर जिसे अज़ाब
---	--

	दिया जाएगा। 2. दूसरा वह काफ़िर जिसे अज़ाब नहीं दिया जाएगा। जिस काफ़िर का ख़ातिमा कुफ़्र पर होगा, वही अज़ाब का मुस्तहिक्क है, और अल्लाह तआला उस पर नाराज़ होता है और उससे दुश्मनी रखता है। और जिस काफ़िर का अंजाम ईमान पर होगा, उसे अज़ाब नहीं दिया जाएगा। अल्लाह तआला न उस पर ग़ज़ब फ़रमाता है और न उससे नफ़रत करता है, बल्कि उससे मुहब्बत करता है और उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाता है। यह मुहब्बत उसके कुफ़्र की वजह से नहीं, बल्कि उस ईमान की वजह से है जो आख़िरकार उसके नसीब में आने वाला है।
This means that it is not permitted to make the following general statement: a believer deserves the reward and an unbeliever deserves the punishment. Rather such a statement must be made conditional on the end result. Because of this we say that Allah was pleased with ‘Umar	इसका मतलब यह है कि यह उमूमी तौर पर कहना दुरुस्त नहीं कि: "हर मोमिन सवाब का मुस्तहिक्क है और हर काफ़िर अज़ाब का मुस्तहिक्क है।" बल्कि ऐसा हुक्म अंजाम और ख़ातमे के एतिबार से लगाया जाना चाहिए। इसी बुनियाद पर हम कहते हैं कि

even while he was worshipping idols and meant to reward him and admit him to the Garden, not, of course, for his worship of idols, but for his ultimate belief. On the other hand, Allah was angry with Iblīs even while he was worshipping because of his ultimate disbelief.	अल्लाह तआला हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से उस वक़्त भी राज़ी था जब वे बुतों की इबादत करते थे, और अल्लाह का इरादा था कि उन्हें अज़्र दे और जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। अलबत्ता यह रज़ा और अज़्र उनकी बुत-परस्ती की वजह से नहीं था, बल्कि उस ईमान की वजह से था जिस पर उनका अंजाम होने वाला था। इसके बरअक्स इब्लीस पर अल्लाह तआला उस वक़्त भी नाराज़ था जब वह इबादत कर रहा था, क्योंकि अल्लाह तआला जानता था कि उसका अंजाम कुफ़्र पर होगा। लिहाज़ा अल्लाह की रज़ा या नाराज़गी का तअल्लुक़ महज़ मौजूदा हालत से नहीं, बल्कि उस अंजाम से भी है जिसका अल्लाह तआला को पहले से इल्म है।
The Qadariyyah differed regarding this matter. They said that Allah was not angry with Iblīs when he worshipped Him nor pleased with ‘Umar when he was worshipping idols. This is false since it is confirmed that Allah knew how	क़दरिय्या ने इस मसअले में इख़्तिलाफ़ किया है। उनका कहना है कि जब इब्लीस अल्लाह की इबादत करता था तो अल्लाह उस पर नाराज़ नहीं था, और जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बुतों की इबादत करते थे तो अल्लाह उनसे राज़ी नहीं

Iblīs would end up and how ‘Umar would end up even though this had not yet happened. So it is confirmed that He was angry with Iblīs and loved ‘Umar. The consensus of the Community indicates that Allah would never show love for anyone He knew was going to be one of the people of the Fire. He would be angry with him. He does, however, love the one He knows will be one of the people of the Garden.	था। यह बात दुरुस्त नहीं, क्योंकि यह बात साबित है कि अल्लाह तआला को पहले ही मालूम था कि इब्लीस का अंजाम क्या होगा और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का अंजाम क्या होगा, अगरचे उस वक़्त ये उमूर अभी वुकूअ-पज़ीर नहीं हुए थे। लिहाज़ा यह बात साबित है कि अल्लाह तआला इब्लीस पर नाराज़ था और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुहब्बत करता था। उम्मत के इज्मा से भी यह मालूम होता है कि अल्लाह तआला कभी ऐसे शख्स से मुहब्बत नहीं करता जिसके बारे में वह जानता हो कि वह अहल-ए-जहन्नम में से होगा, बल्कि वह उस पर नाराज़ होता है। अलबत्ता अल्लाह तआला उस शख्स से मुहब्बत करता है जिसके बारे में वह जानता है कि वह अहल-ए-जन्नत में से होगा।
The Messenger of Allah ﷺ said, ‘Actions are revealed by their final seals.’ That is why Sufi scholars say that faith is not what the slave is adorned	रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "आमाल का एतिबार उनके ख़ातमे पर होता है।" इसी वजह से सूफ़ी उलेमा कहते हैं

with in word and deed, but faith is the preordainment of happiness before time. As for its outward appearance on individuals, that may be either empty of reality or actually true.	कि ईमान सिर्फ़ वह चीज़ नहीं है जिससे बंदा अपने अक़्वाल और आमाल के ज़रिये आरास्ता नज़र आए, बल्कि हक़ीक़ी ईमान दरअसल वह सआदत है जो अल्लाह तआला ने अज़ल में मुक़द्दर फ़रमा दी हो। रहा लोगों पर ईमान का ज़ाहिरी इज़हार, तो वह कभी हक़ीक़त से ख़ाली भी हो सकता है और कभी वाक़ई सच्चा और हक़ीक़ी भी होता है।
This is confirmed in <i>Sahih Muslim</i> and elsewhere by the hadith from ‘Abdullāh ibn Mas‘ūd in which the Messenger of Allah ﷺ said, ‘The way that each of you is created is that you are gathered in your mother’s womb for forty days as a sperm-drop and then for a similar length of time as a blood-clot and then for a similar length of time as a lump of flesh. Then an angel is sent and he breathes the spirit into you and is encharged with four commandments: to write down your provision, your life-span, your actions, and whether you	इस मफ़हूम की ताईद सहीह मुस्लिम और दीगर कुतुब-ए-हदीस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी इस हदीस से होती है, जिसमें रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से हर एक की पैदाइश इस तरह होती है कि वह अपनी माँ के रहम में चालीस दिन तक नुत्फ़ा रहता है, फिर उतनी ही मुद्दत तक ख़ून का लोथड़ा (अलक्का) रहता है, फिर उतनी ही मुद्दत तक गोश्त का टुकड़ा (मुद्ग़ा) रहता है। इसके बाद एक फ़रिश्ता भेजा जाता है, जो उसमें रूह फूँकता है, और उसे चार बातें लिखने का हुक्म दिया जाता है: उसका रिज़क़, उसकी उम्र, उसके

will be wretched or happy. By Him, apart from Whom there is no god, one of you can do the actions of someone destined for the Garden until there is only an armspan between him and it, and then what is written will overtake him and he will do the actions of someone destined for the Fire and enter it. And one of you can do the actions of someone destined for the Fire until there is only an armspan between him and it, and then what is written will overtake him and he will do the actions of someone destined for the Garden and enter it.'	आमाल, और यह कि वह बदबख्त होगा या खुशबख्त। उस ज़ात की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं! तुम में से कोई शख्स जन्नतियों जैसे आमाल करता रहता है, यहाँ तक कि उसके और जन्नत के दरमियान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है, फिर उस पर वही चीज़ ग़ालिब आ जाती है जो लिख दी गई थी, चुनाँचे वह जहन्नमियों जैसे आमाल करने लगता है और जहन्नम में दाख़िल हो जाता है। और तुम में से कोई शख्स जहन्नमियों जैसे आमाल करता रहता है, यहाँ तक कि उसके और जहन्नम के दरमियान सिर्फ़ एक हाथ का फ़ासला रह जाता है, फिर उस पर वही चीज़ ग़ालिब आ जाती है जो लिख दी गई थी, चुनाँचे वह जन्नतियों जैसे आमाल करने लगता है और जन्नत में दाख़िल हो जाता है।"
Abū Muḥammad ‘Abd al-Ghanī ibn Sa‘īd al-Miṣrī transmitted a hadith about the zindīqs from Muḥammad ibn Sa‘īd ash-Shāmī, who was crucified for being a zindīq,	अबू मुहम्मद अब्दुल ग़नी बिन सईद अल-मिस्री ने ज़िन्दीकों के बारे में एक हदीस रिवायत की, मुहम्मद बिन सईद अश-शामी से — जिसे ज़िन्दीक होने के सबब सूली दी गई थी —

from Sulaymān ibn Mūsā al-Ashdaq from Mujājid ibn Jabr from Ibn ‘Abbās that Abū Rāzin al-‘Uqaylī said, ‘The Messenger of Allah ﷺ told me, “Abū Rāzin, you and I will drink from a milk whose taste is unaltered.” Then I asked, “How will Allah bring the dead to life?” He said, “Have you passed by a land which is barren and then you pass by it and it is lush, and then you pass by it again and it is barren and you pass by it again and it is lush?” I replied, “Yes.” He said, “That is how the Resurrection is.” I asked, “How will I know that I am a believer?” He said, “None of this Community (or My Community) does an action and knows that it is good and that Allah will reward it, or does an evil action and knows that it is bad and that Allah will either punish it or forgive it, without that showing that he is a believer.”’	सुलेमान बिन मूसा अल-अशदक़ से, वह मुजाहिद बिन जबर से, वह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि अबू राज़िन अल-उक़ैली ने कहा: "रसूलुल्लाह ﷺ ने मुझसे फ़रमाया: 'ऐ अबू राज़िन! तुम और मैं ऐसे दूध में से पिँएँगे जिसका ज़ायक़ा कभी नहीं बदलेगा।' फिर मैंने अर्ज़ किया: 'अल्लाह तआला मुर्दों को कैसे ज़िन्दा करेगा?' आप ﷺ ने फ़रमाया: 'क्या तुम किसी ऐसी ज़मीन के पास से गुज़रे हो जो बंजर और ख़ुश्क हो, फिर दोबारा उसके पास से गुज़रो तो वह सरसब्ज़ व शादाब हो, फिर उसके पास से गुज़रो तो वह दोबारा ख़ुश्क हो, और फिर उसके पास से गुज़रो तो वह फिर सरसब्ज़ हो चुकी हो?' मैंने अर्ज़ किया: 'जी हाँ।' आप ﷺ ने फ़रमाया: 'क्रियामत भी इसी तरह होगी।' मैंने अर्ज़ किया: 'मैं कैसे जानूँ कि मैं मोमिन हूँ?' आप ﷺ ने फ़रमाया: 'इस उम्मत में से (या: मेरी उम्मत में से) जो शख्स कोई
--	--

	नेक अमल करता है और जानता है कि वह नेक है और अल्लाह उस पर उसे सवाब देगा, या कोई बुरा अमल करता है और जानता है कि वह बुरा है और अल्लाह उस पर उसे सज़ा दे सकता है या उसे माफ़ फ़रमा सकता है, तो यही बात उसके मोमिन होने की अलामत है।"
Even if the isnād of this hadith is not strong, its meaning is sound. It does not contradict the hadith of Ibn Mas'ūd. That depends on the seal as the Prophet ﷺ said, 'Actions are defined by their final seals.' This indicates that he is actually a believer, and Allah knows best.	अगरचे इस हदीस की सनद मज़बूत नहीं है, लेकिन इसका मफ़हूम दुरुस्त है। यह इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस के खिलाफ़ नहीं है। इसका दारोमदार खातिमे पर है, जैसा कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: "आमाल का एतिबार उनके आखिरी अंजाम (खातिमे) पर होता है।" यह इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि वह हक़ीक़तन मोमिन है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।
Linguists say, 'A hypocrite (munāfiq) is called a hypocrite when he displays outwardly something different from what he is concealing inside himself, like the jerboa whose hole is called a nāfiqā'. That is because it burrows into the earth leaving some fine soil	माहिरीन-ए-लुग़त कहते हैं: "मुनाफ़िक़ को मुनाफ़िक़ इसलिए कहा जाता है कि वह अपने बातिन में जो कुछ छिपाए हुए होता है, उसके बरअक्स चीज़ ज़ाहिर करता है। इसकी मिसाल यरबूअ (एक सहराई चूहे-नुमा जानवर) की है, जिसके

near the surface. When it is alarmed, it covers the mouth of its hole with dirt and leaves, so the outside of its hole seems to be solid earth whereas the inside is really hollow. Thus the outside of the hypocrite has the appearance of faith while inwardly it is really disbelief.'	बिल को 'नाफ़िक़ा' कहा जाता है।" इसकी वजह यह है कि यरबूअ ज़मीन में बिल बनाता है और सत्ह-ए-ज़मीन के करीब कुछ नरम मिट्टी छोड़ देता है। जब उसे किसी खतरे का अंदेशा होता है तो वह अपने बिल के दहाने को मिट्टी और पत्तों से ढाँप देता है, चुनाँचे बाहर से उसका बिल मज़बूत ज़मीन मालूम होता है, हालाँकि अंदर से वह खोखला होता है। इसी तरह मुनाफ़िक़ का ज़ाहिर ईमान का रूप रखता है, जबकि उसका बातिन दरहक़ीक़त कुफ़्र पर मुश्तमिल होता है।
They think they deceive Allah and those who believe. They deceive no one but themselves but they are not aware of it. [2:9]	वह समझते हैं कि वह अल्लाह और ईमान वालों को धोखा दे रहे हैं। हालाँकि वह अपने सिवा किसी को धोखा नहीं देते, लेकिन उन्हें इसका शऊर नहीं होता। [2:9]
They think they deceive Allah and those who believe.	वह समझते हैं कि वह अल्लाह और ईमान वालों को धोखा दे रहे हैं।
Our scholars have said that their imagined deceit of Allah is in themselves and in their thinking. It is said that it is by their actions, which are those	हमारे उलेमा ने फ़रमाया है कि अल्लाह के साथ उनके धोखे का गुमान दरअसल उनके अपने नफ़्स और उनकी सोच में है। यह भी कहा

of a deceiver. It is said that there is something elided here and that what is really meant is deceit of the Messenger of Allah ﷺ. Al-Hasan and others said that Allah has made their deceit of His Messenger equivalent to deceit of Himself because the Prophet ﷺ called them using Allah's Words. The same applies to their deceit of the believers as a whole: in reality they are trying to deceive Allah. Their deceit lies in their display of faith which differs from the disbelief they conceal. This results in their lives and property being spared and makes them think that they are safe and have been successful in deceiving the believers. Some interpreters said that.	गया है कि उनका धोखा उनके उन आमाल के ज़रिए है जो धोखा देने वालों जैसे होते हैं। यह भी कहा गया है कि यहाँ कुछ अल्फ़ाज़ महज़ूफ़ हैं, और अस्ल मानी यह हैं कि वह रसूलुल्लाह ﷺ को धोखा देने की कोशिश करते हैं। इमाम हसन बसरी और दीगर उलेमा ने कहा है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ को धोखा देने को अपने आप को धोखा देने के मुतरादिफ़ करार दिया है, क्योंकि नबी करीम ﷺ ने उन्हें अल्लाह के कलाम के ज़रिए दावत दी थी। इसी तरह तमाम मोमिनीन को धोखा देने का मामला भी है; हक़ीक़त में वह अल्लाह ही को धोखा देने की कोशिश कर रहे होते हैं। उनका धोखा इस बात में है कि वह ईमान का इज़हार करते हैं जबकि अपने अंदर कुफ़्र को छिपाए रखते हैं। इसके नतीजे में उनकी जानें और माल महफूज़ रहते हैं, और वह यह समझते हैं कि वह महफूज़ हो गए हैं और मोमिनीन को धोखा देने में कामयाब हो चुके हैं। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने यही तफ़सीर
---	--

	बयान की है।
Linguists say that the root of the verb <i>khada'a</i> (deceit) means corruption. So the meaning is that they corrupt their faith and actions, in respect of what is between them and Allah, by showing off. This is explained by the Prophet ﷺ. Its root is also said to signify concealment, from which comes <i>mikhda'</i> , a cabinet in which something is kept in the house. One form of the word is used of a hyena concealing itself in its den.	माहिरीन-ए-लुगत कहते हैं कि "खदअ" (धोखा देना) के मादे का अस्ल मानी फ़साद पैदा करना है। इस बुनियाद पर आयत का मफ़हूम यह है कि वह रियाकारी के ज़रिए अपने ईमान और अपने आमाल को, जो उनके और अल्लाह के दरमियान हैं, फ़ासिद कर देते हैं। नबी करीम ﷺ की अहादीस भी इसी मानी की वज़ाहत करती हैं। यह भी कहा गया है कि इस लफ़्ज़ का अस्ल मानी छिपाना और पोशीदा रखना है। इसी मादे से "मिखदअ" का लफ़्ज़ बना है, जिससे मुराद घर में वह अलमारी या खाना है जिसमें कोई चीज़ छिपाकर रखी जाती है। इसी मादे की एक सूरत उस लकड़बग्घे (ज़िबअ) के लिए भी इस्तेमाल होती है जो अपने बिल में छिप जाता है और खुद को पोशीदा रखता है।
They deceive no one but themselves	वह अपने सिवा किसी को धोखा नहीं देते।
The words, 'They deceive no one but themselves,' mean that	"वह अपने सिवा किसी को धोखा नहीं देते" का मतलब यह है कि

the result of what they do is that only they are deceived. There is a saying: 'Whoever tries to deceive someone who is not deceived has deceived himself.' This is true because deceit can only occur in respect of someone who does not know the inward reality. Any attempt to deceive someone who knows what is really going on is inevitably self-deceit. This is proof that the hypocrites do not recognise Allah since they do not know that He is not deceived. The Prophet ﷺ said, 'Do not deceive Allah. If anyone deceives Allah, Allah deceives him and his self deceives him while he is not aware.' They asked, 'Messenger of Allah, how can Allah be deceived?' He replied, 'By your doing what Allah has commanded while seeking the pleasure of another by it.' The full extent of this deception will be seen in the interpretation of Allah's words: <i>'Allah is mocking them.'</i>	उनके अमल का नतीजा सिर्फ़ यही होता है कि वह खुद ही धोखे में पड़ते हैं। एक क़ौल है: "जो शख्स ऐसे आदमी को धोखा देने की कोशिश करे जिसे धोखा नहीं दिया जा सकता, वह दरहक़ीक़त अपने आप को धोखा देता है।" यह बात दुरुस्त है, क्योंकि धोखा सिर्फ़ उसी शख्स के साथ हो सकता है जो किसी चीज़ की बातिनी हक़ीक़त से वाक़िफ़ न हो। लेकिन जो शख्स हक़ीक़त-ए-हाल को जानता हो, उसे धोखा देने की हर कोशिश लाज़िमन खुद-फ़रेबी बन जाती है। यह इस बात की दलील है कि मुनाफ़ि़क़ अल्लाह तआला की मआरिफ़त नहीं रखते, क्योंकि अगर वह अल्लाह को पहचानते तो जानते कि उसे धोखा नहीं दिया जा सकता। नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह को धोखा देने की कोशिश न करो। जो शख्स अल्लाह को धोखा देने की कोशिश करता है, अल्लाह उसे धोखे में डाल देता है, और
---	--

	उसका अपना नफ़्स उसे धोखा देता है जबकि उसे इसका शऊर नहीं होता।" लोगों ने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! अल्लाह को कैसे धोखा दिया जा सकता है?" आप ﷺ ने फ़रमाया: "यह कि तुम अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ कोई अमल करो, लेकिन उसके ज़रिए अल्लाह के सिवा किसी और की रज़ा हासिल करना चाहो।" इस धोखे की मुकम्मल हक़ीक़त अल्लाह तआला के इस फ़रमान की तफ़्सीर में वाज़ेह होगी: "अल्लाह उनका मज़ाक़ उड़ा रहा है।"
Nāfi‘, Ibn Kathīr and Abū ‘Amr read, <i>yukhādi‘ūna</i> for ‘deceive’ both times it occurs, whereas ‘Āṣim, Ḥamzah, al-Kisā’ī and Ibn ‘Āmir read <i>yakhda‘ūna</i>, without the middle <i>alif</i> the second time.	"नाफ़े, इब्न कसीर और अबू अम्र ने 'धोखा देते हैं' के शब्द को दोनों बार 'युखादिऊना' पढ़ा है, जबकि आसिम, हमज़ह, किसाई और इब्न आमिर ने दूसरी बार उसे 'यखदऊना' (बीच के अलिफ़ के बिना) पढ़ा है।"
but they are not aware of it.	"लेकिन वे इसका शऊर नहीं रखते।"
This means that they do not understand that the evil of their	इस का मतलब यह है कि वे यह नहीं समझते कि उनके धोखे का वबाल

deception will come back on them; they think that they will be saved and win by their deceit. That may seem to be the case in this world but in the Next World they will be told, <i>'Go back and look for light.'</i> Linguists say that 'being aware of a thing' is to comprehend it.	खुद उन्हीं पर लौट कर आया। वे गुमान करते हैं कि अपनी फ़रेबकारी के ज़रिए नजात पा लेंगे और कामयाब हो जाएंगे। दुनिया में बज़ाहिर ऐसा महसूस हो सकता है, लेकिन आखिरत में उनसे कहा जाएगा: "वापस जाओ और नूर तलाश करो।" लुग़वी माहिरीन कहते हैं कि किसी चीज़ का शऊर या इदराक़ हासिल करना उसको समझने और उसकी हक़ीक़त को जान लेने का नाम है।
There is a sickness in their hearts and Allah has increased their sickness. They will have a painful punishment on account of their denial. [2:10]	उनके दिलों में एक बीमारी है, पस अल्लाह ने उनकी बीमारी में इज़ाफ़ा कर दिया। और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है, इस वजह से कि वे झूठ बोलते थे (या हक़ को झुटलाते थे)। [2:10]
There is a sickness in their hearts	"उनके दिलों में मर्ज़ है।"
In the words <i>'a sickness in their hearts'</i>, sickness is a metaphor for the corruption caused by their lack of faith. That is either doubt and hypocrisy or denial and repudiation. The meaning is	"उनके दिलों में एक बीमारी है" के अल्फ़ाज़ में बीमारी से मुराद एक मजाज़ी ताबीर है, जो ईमान की कमी के बाइस पैदा होने वाली ख़राबी और फ़साद को ज़ाहिर करती है। यह बीमारी या तो शक और निफ़ाक़ है,

that their hearts are sick since they lack the protection, success and support which come from true faith. Ibn Fāris, the linguist, says that sickness is anything which removes a person from good health such as illness, hypocrisy, or shortcoming in something.	या इन्कार और तकज़ीब। इस का मतलब यह है कि उनके दिल बीमार हैं, क्योंकि वे उस हिफ़ाज़त, कामयाबी और ताईद से महरूम हैं जो सच्चे ईमान के नतीजे में हासिल होती है। लुग़ात के माहिर इब्न फ़ारिस कहते हैं कि बीमारी हर उस चीज़ को कहते हैं जो इंसान को उसकी अच्छी सेहत की हालत से निकाल दे, जैसे जिस्मानी मर्ज़, निफ़ाक़, या किसी चीज़ में कमी और नुक़्स।
and Allah has increased their sickness	"और अल्लाह ने उनकी बीमारी में इज़ाफ़ा कर दिया
This is a supplication against them. The meaning of these words is that Allah has increased them in doubt and hypocrisy on top of their disbelief and lack of support and lack of power. So this āyah indicates the permission to pray against the hypocrites and expel them because they are the worst of Allah's creatures. Indeed one possibility is that the words actually are a supplication against them with	यह उनके खिलाफ़ एक बददुआ है। इन अल्फ़ाज़ का मतलब यह है कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र, महरूमी-ए-नुसरत और कमज़ोरी के साथ-साथ उनके शक और निफ़ाक़ में भी इज़ाफ़ा कर दिया। पस यह आयत इस बात पर दलालत करती है कि मुनाफ़िक़ों के खिलाफ़ दुआ करना और उन्हें दूर करना जायज़ है, क्योंकि वे अल्लाह की मख़लूक़ में सबसे बदतरीन हैं। एक एहतिमाल यह भी बयान किया

the meaning, 'May Allah increase their sickness'. It is said that the phrase is simply information from Allah about their increased sickness, meaning sickness on top of their sickness. He says in another āyah: <i>'It adds defilement to their defilement.'</i>	गया है कि ये अल्फ़ाज़ दरअसल उनके खिलाफ़ बददुआ हैं, जिसका मतलब यह है: "अल्लाह उनकी बीमारी में इज़ाफ़ा करे।" यह भी कहा गया है कि यह इबारत महज़ अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़बर है कि उनकी बीमारी बढ़ा दी गई है, यानी एक बीमारी पर दूसरी बीमारी का इज़ाफ़ा कर दिया गया है। इसी मानी की ताईद एक दूसरी आयत से भी होती है, जहाँ अल्लाह तआला फ़रमाता है: "यह उनकी नजासत पर मज़ीद नजासत का इज़ाफ़ा कर देती है।"
Those with knowledge of the precise use of language say that the first '<i>sickness in their hearts</i>' is because of their reliance on this world and their love for it and their neglect of the Next World and their turning away from it. Then Allah's words '<i>Allah has increased their sickness</i>' mean that He has thrown them back on themselves and loaded them with the cares of this world, so	अहल-ए-इल्म, जो ज़बान के दक्कीक़ इस्तेमाल से वाकिफ़ हैं, कहते हैं कि "उनके दिलों में बीमारी है" से मुराद यह है कि वे दुनिया पर भरोसा करते हैं, उससे मुहब्बत रखते हैं, आखिरत से ग़फ़लत बरतते हैं और उससे मुँह मोड़े हुए हैं। फिर अल्लाह तआला के इस फ़रमान "अल्लाह ने उनकी बीमारी में इज़ाफ़ा कर दिया" का मतलब यह है कि अल्लाह ने उन्हें उनके अपने हाल पर

that they are unable to break through them and turn to concern for the Next World. Al-Junayd said, 'Sickness of the heart comes from following the lower desires, and sickness of the limbs comes from the sickness of the body itself.'	छोड़ दिया और दुनिया की फ़िक्र व परेशानियों का बोझ उन पर डाल दिया, यहाँ तक कि वे उन उलझनों से निकलकर आखिरत की फ़िक्र की तरफ़ मुतवज्जेह होने के क़ाबिल न रहे। जुनैद ने फ़रमाया: "दिल की बीमारी ख़्वाहिशात-ए-नफ़्स की पैरवी से पैदा होती है, जबकि आज़ा की बीमारी ख़ुद जिस्म की बीमारी से पैदा होती है।"
on account of their denial.	"इस वजह से कि वे झूठ बोलते थे।"
This refers to their denial of the Messengers and rejection of Allah. It is their denial of His ayas. Asim, Hamzah and al-Kisa'i recite <i>yakdhibuna</i> meaning 'because of their lying'.	मुराद रसूलों का इंकार करना और अल्लाह को झुठलाना है। यानी यह अल्लाह की आयात के इंकार की वजह से है। आसिम, हमज़ह और किसाई (यकज़िबून) की क़िराअत करते हैं, जिसका मतलब है: "उनके झूठ बोलने की वजह से" या "उनके झूठ के बाइस"।
Scholars disagree about why the Prophet ﷺ left the hypocrites alone even though he knew that they were hypocrites. There are basically	उलमा का इस बारे में इख़िलाफ़ है कि नबी करीम ﷺ ने मुनाफ़ि़कों को, बावजूद इसके कि आप ﷺ जानते थे कि वे मुनाफ़ि़क़ हैं, क्यों छोड़ दिया और उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई क्यों न

four positions.	की। इस मसले में बुनियादी तौर पर चार अक़वाल हैं।
Some scholars say that he did not kill them because he was the only one who knew their state. Without exception, scholars agree that a qāḍī may not issue a sentence of execution on the basis of personal knowledge. They disagree about lesser sentences.	बाज़ उलमा का कहना है कि नबी करीम ﷺ ने उन्हें क़त्ल नहीं किया क्योंकि उनकी हक़ीक़त-ए-हाल को सिर्फ़ आप ﷺ ही जानते थे। उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि कोई क़ाज़ी महज़ अपनी ज़ाती मालूमात की बुनियाद पर सज़ा-ए-मौत का फ़ैसला नहीं दे सकता। अलबत्ता इससे कम दर्जे की सज़ाओं के बारे में उनके दरमियान इख़िलाफ़ है।
Ibn al-‘Arabī said, ‘This is contradictory. Al-Mujadhdhir ibn Ziyād was killed by al-Hārith ibn Suwayd ibn aṣ-Ṣāmit because al-Mujadhdhir had killed his father, Suwayd, in the Battle of Bu‘āth. Al-Hārith became Muslim and was ignored during the Battle of Uhud and he killed al-Mujadhdhir. Jibrīl informed the Prophet ﷺ and he had him killed because he had murdered him, and treacherous murder incurs one of the <i>ḥudūd</i> of Allah.’ This is negligence on	इब्नुल-अरबी ने कहा: "यह बात मुतनाकिज़ (विरोधाभासी) है। मुजज़िर बिन ज़ियाद को हारिस बिन सुवैद बिन सामित ने क़त्ल किया था, क्योंकि मुजज़िर ने जंग-ए-बुआथ में उसके वालिद सुवैद को क़त्ल किया था। हारिस इस्लाम ले आया था और जंग-ए-उहुद के दौरान उस पर तवज्जुह न दी गई, फिर उसने मुजज़िर को क़त्ल कर दिया। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने नबी करीम ﷺ को इसकी ख़बर दी, तो आप ﷺ ने उसे क़त्ल करवा दिया, क्योंकि उसने मुजज़िर को क़त्ल किया था, और

the part of this imam because if this consensus is confirmed, it is not contradictory with what he mentioned because consensus was only established after the death of the Prophet ﷺ and the end of Revelation. That case was a specific one based on Revelation and so it is not used as a proof nor is it superseded by consensus. Allah knows best.	ख़ियानत के साथ किया गया क़त्ल अल्लाह की मुकर्रर की हुई हदों में से एक हद को वाजिब कर देता है।" मुसन्निफ़ कहते हैं कि इस इमाम से यहाँ सह (चूक) हुई है, क्योंकि अगर मज़क़ूरा इज्मा साबित मान लिया जाए, तब भी यह उस वाक़िए के साथ मुतनाक़िज़ नहीं है जिसका उन्होंने ज़िक्र किया है। इसलिए कि इज्मा तो नबी करीम ﷺ के विसाल और वही के ख़त्म होने के बाद क़ायम हुआ था। जबकि यह एक ख़ास वाक़िआ था जिसका फ़ैसला वही की बुनियाद पर हुआ था। लिहाज़ा न तो इसे बतौर दलील पेश किया जा सकता है और न ही इज्मा इसे मंसूख कर सकता है। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।
The people of ash-Shāfi‘ī say that he did not kill the hypocrites because a zindīq, who is someone who conceals disbelief and shows faith, is asked to repent and is not killed. Ibn al-‘Arabī said, ‘This is weak. The Prophet ﷺ did not ask them to repent and no one transmits that and no one says	इमाम शाफ़ई के अस्हाब का कहना है कि नबी करीम ﷺ ने मुनाफ़िक़ों को इस लिए क़त्ल नहीं किया क्योंकि ज़िन्दीक़, यानी वह शख्स जो कुफ़्र को छुपाता और ईमान का इज़हार करता है, उससे तौबा का मुतालबा किया जाता है और उसे क़त्ल नहीं किया जाता। इब्नुल-अरबी ने कहा:

that it is obligatory to ask zindīqs (heretics) to repent. The Prophet ﷺ left them alone in spite of his knowledge of them.'	"यह क़ौल कमज़ोर है। नबी करीम ﷺ ने मुनाफ़िकों से तौबा का मुतालबा नहीं किया, और न ही किसी ने यह रिवायत नक़ल की है। नीज़ कोई ऐसा क़ाइल नहीं जो यह कहता हो कि ज़िन्दीकों से तौबा का मुतालबा करना वाजिब है। नबी करीम ﷺ ने उनकी हकीकत-ए-हाल जानने के बावजूद उन्हें छोड़ दिया था।"
He did not kill them in order to bring hearts closer to him and so that people would not be alienated. The Prophet ﷺ indicated this when he said to 'Umar, 'I seek refuge with Allah from people saying that I kill my Companions.' Al-Bukhārī and Muslim transmitted it. He used to give people things to bring their hearts closer although he knew about their weak belief. This is the position of our scholars and others. Ibn 'Aṭīyyah said that this is the approach of the people of Mālik when talking about the Messenger of Allah ﷺ refraining from the hypocrites, as stated by Muḥammad ibn al-Jahm, Qāḍī	नबी करीम ﷺ ने मुनाफ़िकों को क़त्ल नहीं किया ताकि लोगों के दिल आप ﷺ की तरफ़ माइल रहें और वे आप ﷺ से बदज़न या दूर न हो जाएँ। नबी करीम ﷺ ने खुद इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमाया जब आप ﷺ ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ इस बात से कि लोग यह कहें कि मैं अपने साथियों को क़त्ल करता हूँ।" इस रिवायत को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने नक़ल किया है। नबी करीम ﷺ बाज़ लोगों को उनके दिलों को इस्लाम की तरफ़ माइल करने के लिए माल व अतियात भी अता फ़रमाया करते थे, हालाँकि आप ﷺ उनके ईमान की कमज़ोरी से

Ismā'īl, al-Abharī and Ibn al-Mājishūn.	वाकिफ़ थे। यही हमारे उलमा और दीगर अहल-ए-इल्म का मौकिफ़ है। इब्र अतीया ने कहा है कि मुनाफ़िकों के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ के तर्क-ए-मुआख़ज़ा की तौजीह में मालिकी उलमा का यही मसलक है, जैसा कि मुहम्मद बिन अल-जहम, क़ाज़ी इस्माईल, अबहरी और इब्र अल-माजिशून ने बयान किया है।
As for those who use the words of Allah Almighty: <i>'If the hypocrites and those with sickness in their hearts do not desist' to the words 'mercilessly put to death'</i> as justification for killing hypocrites, Qatadah said that this only applies when they make their hypocrisy public. Malik said, 'Hypocrisy in the time of the Messenger of Allah ﷺ is like heresy among us today. If there is firm evidence against him, a zindiq is killed without being asked to repent.' This is one of the positions of ash-Shafi'i.	जहाँ तक उन लोगों का संबंध है जो अल्लाह तआला के इस फ़रमान: ("अगर मुनाफ़िक और वे लोग जिनके दिलों में बीमारी है बाज़ न आएँ") से लेकर("उन्हें बे-रहमी से क़त्ल कर दिया जाएगा") तक की आयतों को मुनाफ़िकों के क़त्ल के तौर पर पेश करते हैं, तो क़तादा ने फ़रमाया कि यह हुक्म सिर्फ़ उस सूरत में है जब वे अपनी मुनाफ़िक़त को अलानिया ज़ाहिर करें। इमाम मालिक ने फ़रमाया: "रसूलुल्लाह ﷺ के ज़माने में निफ़ाक़ की वही हैसियत थी जो हमारे ज़माने

	में ज़िन्दक़ा (इल्हाद व बातिनी कुफ़्र) की है। अगर किसी ज़िन्दीक़ के खिलाफ़ मज़बूत सबूत क़ायम हो जाए तो उसे तौबा का मौक़ा दिए बग़ैर क़त्ल कर दिया जाएगा।" यह इमाम शाफ़िई के एक क़ौल के मुताबिक़ भी है।
Malik said that the Messenger of Allah ﷺ refrained from killing hypocrites to make it clear to his Community that a ruler is not permitted to judge by personal knowledge when there is no other clear evidence against someone. Qaḍi Isma'il said, 'There was no witness against 'Abdullah ibn Ubayy, except for Zayd ibn Arqam alone, nor against al-Julas ibn Suwayd, except 'Umayr ibn Sa'd, his foster son. If two men had testified to the disbelief and hypocrisy of either of the two men, they would have been killed.'	इमाम मालिक ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मुनाफ़िक़ों को क़त्ल करने से इस लिए इज्तिनाब फ़रमाया ताकि अपनी उम्मत के लिए यह बात वाज़ेह कर दें कि किसी हाकिम के लिए यह जायज़ नहीं कि वह महज़ अपनी ज़ाती मालूमात या इल्म की बुनियाद पर फ़ैसला करे, जब तक किसी शख्स के खिलाफ़ कोई वाज़ेह और मोतबर दलील मौजूद न हो। क़ाज़ी इस्माईल ने फ़रमाया: "अब्दुल्लाह बिन उबय्य के खिलाफ़ ज़ैद बिन अरक़म के अलावा कोई गवाह न था, और जुलास बिन सुवैद के खिलाफ़ भी उसके रज़ाई बेटे उमैर बिन सअद के सिवा कोई गवाह न था। अगर इन दोनों में से किसी एक के कुफ़्र और निफ़ाक़ पर दो आदमियों ने गवाही दे दी होती तो उन्हें क़त्ल कर दिया जाता।"

Ash-Shafi'i gave the evidence for the other position when he said, 'The sunnah about someone against whom there is evidence of heresy and who then denies it and proclaims his faith and that he is free of every din except Islam is that it is forbidden to shed his blood.' That is what was stated by the people of opinion (<i>ray</i>), Ahmad, at-Tabari and others. Ash-Shafi'i and his people said, 'The Messenger of Allah ﷺ forbade killing hypocrites as long as they display Islam, even when it is known that they are hypocrites, because what they display outwardly must be accepted.'	इमाम शाफ़िई ने दूसरे मौक़िफ़ के हक़ में दलील देते हुए फ़रमाया: "जिस शख्स के खिलाफ़ ज़िन्दक़ा (इल्हाद) का सुबूत मौजूद हो, फिर वह उसका इंकार करे, अपने ईमान का इज़हार करे और यह ऐलान करे कि इस्लाम के सिवा हर दीन से वह बरी है, तो सुन्नत के मुताबिक़ उसका ख़ून बहाना हराम है।" यही मौक़िफ़ अहल-ए-राय, इमाम अहमद, इमाम तबरी और दीगर उलेमा ने भी इस्तियार किया है। इमाम शाफ़िई और उनके अस्थाब ने कहा: "रसूलुल्लाह ﷺ ने मुनाफ़िक़ों को क़त्ल करने से मना फ़रमाया, जब तक वे इस्लाम का इज़हार करते रहें, अगरचे यह मालूम हो कि वे मुनाफ़िक़ हैं, क्योंकि जो कुछ वे ज़ाहिरन प्रकट करते हैं उसे क़बूल करना लाज़िम है।"
At-Tabarī said, 'Allah Almighty made the rulings between his slaves dependent on the outward and entrusted judgment about their secret beliefs to none of His creation.'	इमाम तबरी ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने अपने बंदों के दरमियान अहकाम और फ़ैसलों को उनके ज़ाहिरी हालात पर मौकूफ़ रखा है, और उनके बातिनी अक़ाइद

No one can judge against what is apparent because that would be judgment by supposition. If anyone had been entitled to do that, the most entitled would have been the Messenger of Allah ﷺ. He judged the hypocrites to be Muslims because of what they displayed outwardly and left their secrets to Allah.’ Allah says that their outward appearance is false: <i>‘Allah bears witness that the hypocrites are certainly liars.’</i>	व नीयतों के बारे में फैसला करने का इस्तिहार अपनी मखलूक में से किसी को नहीं दिया। किसी शख्स के लिए यह जायज़ नहीं कि वह ज़ाहिरी हालत के खिलाफ़ फैसला करे, क्योंकि ऐसा फैसला गुमान और क्रियास पर मबनी होगा। अगर किसी को इसका हक़ हासिल हो सकता था तो सबसे ज़्यादा उसके मुस्तहिक़ रसूलुल्लाह ﷺ थे।" "आप ﷺ ने मुनाफ़िक़ों को उनके ज़ाहिरी इज़हार-ए-इस्लाम की बुनियाद पर मुसलमान करार दिया, और उनके बातिन का मामला अल्लाह के सुपुर्द कर दिया।" हालाँकि अल्लाह तआला ने वाज़ेह फ़रमा दिया है कि उनका ज़ाहिरी दावा झूठा था:"और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ यक़ीनन झूठे हैं।"
There is debate about this distinction. The Prophet ﷺ used to know them – or many of them – by their names and persons by Allah’s informing him of who they were. Hudhayfah also knew who they were since the Prophet ﷺ told	इस तफ़रीक़ और इम्तियाज़ के बारे में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है। नबी करीम ﷺ अल्लाह तआला की तरफ़ से इत्तिला दिए जाने के सबब उन मुनाफ़िक़ों को, या कम-अज़-कम उनमें से बहुत से लोगों को, उनके नामों और अश़्खास के साथ

him so that ‘Umar used to ask him, ‘Hudhayfah, who are they?’ He refused to answer.	जानते थे। इसी तरह हज़रत हुज़ैफ़ाँ भी उन्हें जानते थे, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ ने उन्हें उनके बारे में आगाह कर दिया था। यहाँ तक कि हज़रत उमरँ हुज़ैफ़ाँ से पूछा करते थे: "ऐ हुज़ैफ़ा! वे लोग कौन हैं?" लेकिन हुज़ैफ़ाँ इस सवाल का जवाब देने से इंकार कर देते थे।
Allah preserved the Companions of his Prophet since he made them firm against the efforts of the hypocrites to corrupt them or corrupt their <i>dīn</i> and for this reason there was no harm in their remaining. That is not the case today because we are not safe from the heretics corrupting our common people and the ignorant among us.	अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ के सहाबा किराम को महफूज़ रखा, क्योंकि उसने उन्हें मुनाफ़िकों की उन कोशिशों के मुक़ाबले में साबित-क़दम बनाया जो वे उन्हें गुमराह करने या उनके दीन को बिगाड़ने के लिए करते थे। इसी वजह से मुनाफ़िकों का बाक़ी रहना उस ज़माने में नुक़सानदेह न था। लेकिन आज सूरत-ए-हाल ऐसी नहीं है, क्योंकि हमें इस बात का इत्मीनान नहीं कि अहल-ए-ज़िन्दक़ा और गुमराही हमारे आम लोगों और जाहिल अफ़राद को फ़साद और गुमराही में मुब्तला न कर दें।
When they are told, ‘Do not	"और जब उनसे कहा जाता है कि

cause corruption on the earth,' they say, 'We are only putting things right.' [2:11]	ज़मीन में फ़साद न फैलाओ, तो वे कहते हैं: 'हम तो सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं।'"
Corruption is the opposite of rightness. Its reality is turning from rectitude to its opposite. The meaning in the āyah is: 'Do not cause corruption on the earth through disbelief and friendliness with unbelievers and making people abandon their faith in Muḥammad ﷺ and the Qur'an.' It is said that the earth, before the Prophet ﷺ was sent, was full of corruption and many acts of disobedience were done in it. When the Messenger of Allah ﷺ was sent, the corruption was eliminated and the earth put right. Then, when people again perpetrated acts of disobedience, they corrupted the earth after it had been put right, as Allah says in another āyah: <i>'Do not corrupt the earth after it has been put right.'</i>	फ़साद, सलाह (दुरुस्ती और इस्लाह) की ज़िद है। इसकी हक़ीक़त यह है कि इंसान सीधी राह और दुरुस्त हालत से हटकर उसके बरअक्स रास्ते पर चल पड़े। इस आयत का मअनी यह है: "ज़मीन में कुफ़्र, काफ़िरों से दोस्ती, और लोगों को मुहम्मद ﷺ और कुरआन पर ईमान लाने से रोककर फ़साद न फैलाओ।" एक क़ौल यह भी है कि नबी करीम ﷺ की बअसत से पहले ज़मीन फ़साद और गुनाहों से भरी हुई थी, और उसमें अल्लाह की नाफ़रमानी के बहुत से काम किए जाते थे। जब रसूलुल्लाह ﷺ मबऊस हुए तो उस फ़साद का ख़ातिमा हुआ और ज़मीन की इस्लाह हो गई। फिर जब लोगों ने दोबारा गुनाहों और नाफ़रमानियों का इर्तिकाब शुरू कर दिया तो उन्होंने इस ज़मीन में दोबारा फ़साद बरपा कर दिया, हालाँकि उसकी इस्लाह हो चुकी थी।

	इसी मफ़हूम को अल्लाह तआला ने एक और आयत में यूँ बयान फ़रमाया: "और ज़मीन में उसकी इस्लाह के बाद फ़साद न फैलाओ।"
The word for earth (<i>ard</i>) is feminine and is a generic term so that it means the earth in general. Everything under the sky is earth. The word <i>arīḍ</i> means wide. A common curse is, 'May you have no land (<i>ard</i>).' <i>Arḍ</i> also means the shakes and shaking. It also means catarrh. One derived word means a young palm-tree which is an off-shoot. <i>Irāḍ</i> is a large carpet of wool or hair. A man who is <i>arīḍ</i> is humble and disposed to do good.	अर्ज़ (ज़मीन) का लफ़्ज़ मुअन्नस है और इस्म-ए-जिन्स के तौर पर इस्तेमाल होता है, लिहाज़ा इससे मुराद उमूमी तौर पर पूरी ज़मीन होती है। आसमान के नीचे जो कुछ है वह सब अर्ज़ कहलाता है। अरीज़ के मअनी हैं: कुशादा, वसीअ और फैला हुआ। अरबों की एक मशहूर बद्दुआ यह है: "لَا أَرْضَ لَكَ" यानी: "अल्लाह करे तुम्हारे पास ज़मीन न रहे" या "तुम ज़मीन से महरूम हो जाओ।" अर्ज़ का लफ़्ज़ कपकपी, लरज़िश और थरथराहट के मअनी में भी आता है। इसी तरह यह नज़ला (जुकाम या नाक से बहने वाली बीमारी) के मअनी में भी इस्तेमाल होता है।

	इस मादे से मुश्तक़ एक लफ़्ज़ नख़ल का वह कम उम्र पौधा भी है जो अस्ल खजूर के दरख़्त की जड़ से निकलता है। इराज़ एक बड़े क़ालीन या फ़र्श को कहते हैं जो ऊन या बालों से बना हो। और अरीज़ ऐसे शख्स को भी कहा जाता है जो मुनकसिरुल-मिज़ाज, नर्म-खू और भलाई करने की तरफ़ माइल हो।
they say, "We are only putting things right."	"वे दावा करते हैं: 'हम तो सिर्फ़ बेहतरी और इस्लाह का काम कर रहे हैं।'"
'Putting things right' (<i>ṣalāh</i>) is the opposite of corruption. They say this because they are under the illusion that their corruption is putting things right. One aspect of it is what they do for unbelievers under the false impression that they are setting things right between them and the believers.	इस्लाह (सलाह) फ़साद की ज़िद है। मुनाफ़िक़ यह बात इसलिए कहते हैं कि वे इस ग़लतफ़हमी में मुब्तला होते हैं कि उनका फ़साद दरअसल इस्लाह है। इसकी एक सूरत यह है कि वे काफ़िरों के हक़ में जो काम करते हैं, उसे वे इस गुमान के तहत अंजाम देते हैं कि गोया वे काफ़िरों और मोमिनों के दरमियान सुल्ह, मुवाफ़क़त और इस्लाह पैदा कर रहे हैं। हालाँकि हक़ीक़त में उनका यह तर्ज़-ए-अमल फ़साद और बिगाड़ का

	सबब होता है।
No indeed! They are the corrupters, but they are not aware of it. [2:12]	"ख़बरदार! हक़ीक़त यह है कि यही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं, लेकिन उन्हें शऊर नहीं।" (2:12)
No indeed! They are the corrupters.	"ख़बरदार! हक़ीक़त यह है कि यही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं।"
These words are to refute their claims and to deny what they said. Those with knowledge of the precise use of language say that it shows that their claim is a lie. Do you not see that Allah says: ' <i>They are corrupters</i> '? This is the truth.	ये अल्फ़ाज़ उनके दावे की तरदीद और उनकी बात के इंकार के लिए हैं। अहल-ए-इल्म, जो ज़बान के दक़ीक़ और बारीक इस्तेमाल से वाकिफ़ हैं, कहते हैं कि इस उस्तूब से वाज़ेह होता है कि उनका दावा झूठा है। क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: "बेशक यही लोग फ़साद फैलाने वाले हैं।" यही हक़ीक़त और सच्चाई है, और उनका यह दावा कि "हम तो सिर्फ़ इस्लाह करने वाले हैं" बातिल और बे-बुनियाद है।
but they are not aware of it	"लेकिन उन्हें इसका शऊर नहीं।"
There are two opinions about this. One is that they do corruption secretly and display	इस बारे में दो आराएँ हैं: पहली राय यह है कि वे लोग ख़ुफ़िया तौर पर फ़साद करते थे और ज़ाहिरी

righteousness and are not aware that what they were doing was known by the Prophet ﷺ. The other aspect is that they consider their corruption to be righteousness and are not aware that it is corruption and that they have disobeyed Allah and His Messenger by not making the truth clear and then following it.	तौर पर नेकी और इस्लाह का इज़हार करते थे, और उन्हें यह शऊर न था कि उनके आमाल और उनकी हक़ीक़त नबी करीम ﷺ पर ज़ाहिर हो चुकी है और आप ﷺ उनके हालात से बाख़बर हैं। दूसरी राय यह है कि वे अपने फ़साद को ही इस्लाह समझते थे। उन्हें यह एहसास न था कि उनका अमल दरहक़ीक़त फ़साद है, और यह कि वे अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की नाफ़रमानी कर रहे हैं, क्योंकि उन्होंने हक़ को वाज़ेह तौर पर क़बूल और ज़ाहिर नहीं किया, और फिर उसकी पैरवी भी नहीं की। इस तरह वे गुमराही में मुब्तला रहे, जबकि अपने आपको इस्लाह करने वाला समझते रहे।
When they are told, “Believe in the way that the people believe,” they say, “What! Are we to believe in the way that fools believe?” No indeed! They are the fools but they do not know it. [2:13]	"जब उनसे कहा जाता है कि ईमान लाओ जिस तरह दूसरे लोग ईमान लाए हैं, तो वे कहते हैं: 'क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जैसे बेवकूफ़ ईमान लाए हैं?' ख़बरदार! हक़ीक़त यह है कि बेवकूफ़ तो यही लोग हैं, लेकिन वे जानते नहीं।" (2:13)
When they are told,	"और जब उनसे कहा जाता है"

‘They’ refers to the hypocrites, according to Muqātil and others.	"इनसे" मुराद मुनाफ़िक़ीन हैं, जैसा कि मुक़ातिल और दीगर मुफ़स्सिरीन ने बयान किया है।
“Believe in the way that the people believe,”	"ईमान लाओ जिस तरह लोग ईमान लाए हैं।"
This means to affirm Muḥammad ﷺ and his Sharī‘ah in the same way that the Muhājirun and the people of Yathrib who had become Muslim affirmed them.	इसका मतलब यह है कि मुहम्मद ﷺ और आपकी शरीअत की उसी तरह तस्दीक़ और ईमान लाओ जिस तरह मुहाजिरीन और यसरिब (मदीना) के वे लोग ईमान लाए थे जो इस्लाम क़बूल कर चुके थे।
They say, “What! Are we to believe in the way that fools believe?”	"वे कहते हैं: 'क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जैसे बेवकूफ़ ईमान लाए हैं?'"
This was said by the hypocrites who used to say it when they mocked and made fun of Islam, referring to the Companions of Muḥammad ﷺ. Ibn ‘Abbās said that, and he also said that it was the believers of the People of the Book who were intended by their words. Allah acquainted His Prophet ﷺ and the believers with what they said.	यह बात मुनाफ़िक़ीन कहा करते थे जब वे इस्लाम का मज़ाक उड़ाते और उसका तमस्खुर करते थे, और उनके इस क़ौल से मुराद मुहम्मद ﷺ के सहाबा-ए-किराम थे। यही बात इब्न अब्बास से मरवी है। उन्होंने यह भी फ़रमाया कि उनके इस क़ौल में अहल-ए-किताब में से वे लोग मुराद थे जो ईमान ला चुके थे। अल्लाह तआला ने अपने नबी ﷺ और अहल-ए-ईमान को उन बातों से आगाह कर दिया जो मुनाफ़िक़ीन

	आपस में कहा करते थे।
No indeed! They are the fools,	"ख़बरदार! हक़ीक़त यह है कि बेवकूफ़ तो यही लोग हैं।"
Allah confirmed that they possess foolishness, lack of understanding and lack of insight, and they are the ones properly described by that. He reported that they are the fools but they do not realise that they are because of the rust covering their hearts.	अल्लाह तआला ने वाज़ेह फ़रमा दिया कि हिमाक़त, कम-फ़हमी और बसीरत की कमी दरहक़ीक़त इन्हीं लोगों में पाई जाती है, और इसी वस्फ़ के हक़ीक़ी मुस्तहिक् भी यही हैं। अल्लाह ने ख़बर दी कि बेवकूफ़ यही लोग हैं, लेकिन वे खुद इस हक़ीक़त को नहीं जानते और न ही उसका इद्राक रखते हैं, क्योंकि उनके दिलों पर ज़ंग और पर्दा चढ़ चुका है, जिसने उन्हें हक़ को पहचानने से महरूम कर दिया है।
Al-Kalbī related from Abū Ṣāliḥ from Ibn ‘Abbās that this āyah was revealed about the Jews so that when it was said to them, ‘Believe in the way that the people believe,’ i.e. ‘Abdullāh ibn Sallām and his companions, they said, ‘What! Are we to believe in the way that fools believe?’ meaning the ignorant and superstitious	अल-कलबी ने अबू सालेह के वासिते से इब्न अब्बास से रिवायत किया है कि यह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई। चुनाँचे जब उनसे कहा जाता था: "ईमान लाओ जिस तरह लोग ईमान लाए हैं" यानी अब्दुल्लाह बिन सलाम और उनके साथियों की तरह ईमान ले आओ,

Arabs.	तो वे कहते थे: "क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जैसे बेवकूफ़ ईमान लाए हैं?" इससे उनकी मुराद अरबों के वे लोग थे जिन्हें वे जाहिल और वह-परस्त समझते थे।
The root of <i>safah</i> (foolishness) is lightness and shallowness. It is used of woven cloth when it is flimsy and badly woven and suggests shabbiness. It is used for the wind which makes the branches of a tree move. It is used to disparage a person. <i>Safah</i> is the opposite of <i>hilm</i> (forbearance).	सफ़ह (बेवकूफी, हिमाक़त) का बुनियादी मअनी हल्कापन और कमज़ोरी है। यह लफ़ज़ ऐसे बुने हुए कपड़े के लिए भी इस्तेमाल होता है जो बारीक, कमज़ोर और नाक़िस बुनाई वाला हो, और उसमें हिकारत और बे-वक़अती का मफ़हूम पाया जाता है। इसी तरह यह उस हवा के लिए भी बोला जाता है जो दरख़्त की शाखों को हिलाती और जुंबिश देती है। किसी शख्स की तहक़ीर और मज़म्मत के लिए भी यह लफ़ज़ इस्तेमाल किया जाता है। सफ़ह, हिल्म (बरदबारी, संजीदगी और वक़ार) की ज़िद्द है।
But they do not know it.	लेकिन वे इसका इल्म नहीं रखते।"
These words are like 'They are not aware of it.' Knowledge is	ये अल्फ़ाज़ "वे इसका शऊर नहीं रखते" के मफ़हूम के मानिंद हैं।

recognising and knowing something for what it is.	इल्म का मअनी यह है कि किसी चीज़ को उसकी हक़ीक़त के मुताबिक़ पहचाना जाए और उसे वैसा ही जाना जाए जैसी वह हक़ीक़त में है। यानी इल्म महज़ इत्तिला का नाम नहीं, बल्कि किसी शै की सही मआरिफ़त और उसकी हक़ीक़ी हालत का इद्राक करना इल्म कहलाता है।
When they meet those who believe, they say 'We believe.' But then when they go apart with their shayṭāns, they say, 'We are really with you. We were only mocking.' [2:14]	"और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं: 'हम ईमान ले आए हैं।' लेकिन जब अपने शैतानों (सरदारों और गुमराह साथियों) के पास तन्हाई में जाते हैं तो कहते हैं: 'हम तो तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ मज़ाक कर रहे थे।'" (अल-बक़रह: 14)
This āyah was revealed about the hypocrites.	"यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो ज़ाहिरन ईमान का इज़हार करते थे लेकिन बातिन में मुनाफ़िक़ थे।"
When they go apart with their shayṭāns,	"और जब वे अपने शैतानों के साथ तन्हाई में जाते हैं"
Commentators disagree about the meaning of <i>shayṭāns</i> here. Ibn 'Abbās and as-Suddī said that they are the leaders of the	मुफ़स्सिरीन ने यहाँ "शैतानों" से मुराद के बारे में मुख़्तलिफ़ आराएँ बयान की हैं।

hypocrites. Al-Kalbī said that they are the <i>shayṭāns</i> of the jinn. A group of commentators said that they are the soothsayers. ‘Shayṭāns’ means people distant from faith. The best course is to combine all of these meanings. Allah knows best.	इब्न अब्बास और सुदी ने कहा है कि इससे मुराद मुनाफ़िकों के सरदार और पेशवा हैं। अल-कलबी के नज़दीक इससे मुराद जिन्नत में से शयातीन हैं। मुफ़स्सिरीन के एक गिरोह ने कहा है कि इससे मुराद काहिन और ग़ैबगोई का दावा करने वाले लोग हैं। बाज़ अहल-ए-इल्म के नज़दीक "शयातीन" से मुराद ऐसे लोग हैं जो ईमान से दूर और हक़ से मुनहरिफ़ हों। बेहतरीन बात यह है कि इन तमाम मआनी को जमा कर लिया जाए, क्योंकि यह लफ़्ज़ इन सब पर सादिक़ आ सकता है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।
they say, ‘We are really with you. We were only mocking.’	"वे कहते हैं: 'हम हक़ीक़त में तुम्हारे साथ हैं, और ईमान वालों से जो कुछ कहा था वह सिर्फ़ मज़ाक के तौर पर था।'"
This is the proof against them because, with these words, they negate their claim to be believers. It is said that it	यह बात उनके खिलाफ़ एक वाज़ेह दलील है, क्योंकि इन अल्फ़ाज़ के ज़रिये वे अपने मोमिन होने के दावे की ख़ुद ही नफ़ी कर देते हैं।

means making fun of the believers. <i>Haz'</i> is mockery and playing about.	एक क़ौल यह है कि इसका मतलब यह है कि वे अहल-ए-ईमान का मज़ाक उड़ाते थे। हज़अ (इस्तिहज़ा) के मअनी हैं तमस्खुर करना, मज़ाक उड़ाना और खेल-तमाशे के तौर पर किसी का इस्तिहज़ा करना।
But Allah is mocking them, and drawing them on, as they wander blindly in their excessive insolence. [2:15]	"अल्लाह उनका मज़ाक उड़ा रहा है, और उन्हें ढील दिए जा रहा है ताकि वे अपनी सरकशी में भटकते और अंधे बने फिरते रहें।" (अल-बक्रह: 15)
But Allah is mocking them,	मगर अल्लाह उनके मज़ाक का जवाब उन्हीं के शायान-ए-हाल तरीक़े से दे रहा है।"
This means taking revenge on them and punishing them. He mocks them and repays them for their mocking. The punishment they receive has the same name as the wrong action they commit. This is the statement of the majority of scholars and is a common Arabic usage.	इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला उनसे इंतिक़ाम लेगा और उन्हें सज़ा देगा। वह उनके इस्तिहज़ा और तमस्खुर का बदला उन्हें देगा। यानी अल्लाह तआला उनके मज़ाक का ऐसा जवाब देगा जो उनके अमल के मुनासिब हो। जिस सज़ा का उन्हें सामना होगा, उसे उसी नाम से ताबीर किया गया है जो उन्होंने अपने बुरे अमल के लिए इख़्तियार किया था। चुनाँचे उनके

	इस्तिहज़ा के बदले को भी इस्तिहज़ा कहा गया है। यही जुम्हूर उलेमा का मौक़िफ़ है, और अरबी ज़बान में उस्लूब-ए-कलाम का यह तरीक़ा मअरूफ़ और आम है कि किसी अमल के बदले को उसी अमल के नाम से ताबीर कर दिया जाता है।
Al-Kalbī related from Abū Ṣāliḥ from Ibn ‘Abbās that this āyah refers to the hypocrites of the People of the Book. He mentioned them and their mocking and that when they withdraw to their <i>shayṭāns</i>, meaning their leaders in disbelief, they said, ‘We are with you in your religion. We were only mocking the Companions of Muḥammad.’ Allah will mock them in the Next World and open for them a door between Hell and the Garden and they will be told, ‘Come,’ and they will come swimming in the Fire while the believers are on beds in alcoves looking at them. When they reach the door, it will be shut	अल-कलबी ने अबू सालेह के वासिते से इब्न अब्बास से रिवायत किया है कि यह आयत अहल-ए-किताब के मुनाफ़िक़ों के बारे में नाज़िल हुई है। उन्होंने इन मुनाफ़िक़ों और उनके इस्तिहज़ा का ज़िक्र किया और फ़रमाया कि जब वे अपने शैतानों, यानी कुफ़्र में अपने सरदारों और पेशवाओं, के पास जाते थे तो कहते थे: "हम तुम्हारे दीन पर तुम्हारे साथ हैं, हम तो सिर्फ़ मुहम्मद ﷺ के सहाबा का मज़ाक उड़ा रहे थे।" अल्लाह तआला आख़िरत में उनके साथ ऐसा मामला करेगा जो उनके इस्तिहज़ा के मुनासिब-ए-हाल होगा। उनके लिए जहन्नम और जन्नत के दरमियान एक दरवाज़ा खोला जाएगा

against them and the believers will laugh at them. According to this understanding the words <i>'Allah is mocking them'</i> refer to something which happens in the Next World. The believers will laugh at them when the doors are locked against them. That is confirmed by the words of the Almighty: <i>'those who believe are laughing at the unbelievers, on couches, gazing in wonder'</i> at the people of the Fire. <i>'Have not the unbelievers been rewarded for what they did?'</i>	और उनसे कहा जाएगा: "आओ!" चुनाँचे वे आग में डूबते और तैरते हुए उस दरवाज़े की तरफ़ आँगे, जबकि अहल-ए-ईमान बुलंद मसंदों और हुज्रों में बैठे उन्हें देख रहे होंगे। जब वे उस दरवाज़े तक पहुँच जाएँगे तो वह दरवाज़ा उन पर बंद कर दिया जाएगा, और मोमिन उन पर हँसेंगे। इस तफ़्सीर के मुताबिक़ ("अल्लाह उनका मज़ाक उड़ाता है") से मुराद वह मामला है जो आख़िरत में उनके साथ पेश आएगा। मोमिन उन पर उस वक़्त हँसेंगे जब दरवाज़े उन पर बंद कर दिए जाएँगे। इस मफ़हूम की ताईद अल्लाह तआला के इस फ़रमान से भी होती है: "पस आज ईमान वाले काफ़िरों पर हँस रहे हैं, तख़्तों पर बैठे हुए देख रहे हैं।" फिर फ़रमाया: "क्या काफ़िरों को उनके आमाल का पूरा बदला नहीं दे दिया गया?"
Some people say that Allah's	बाज़ अहल-ए-इल्म का कहना है कि

mocking takes the form of drawing them on by degrees in allowing them to experience the blessings of this world. Allah Almighty shows them kindness in this world, contrary to the reality of their situation which is hidden from them, and veils them from the punishment of the Next World so that they think that He is pleased with them when, in fact, the Almighty has foreordained their punishment. A human being considers this to be mocking, deceit, and tricking.	अल्लाह तआला का उनका मज़ाक उड़ाना इस सूरत में है कि वह उन्हें बतदरीज मोहलत देता है और दुनिया की नेमतों से फ़ायदा उठाने का मौक़ा फ़राहम करता है। अल्लाह तआला दुनिया में उनके साथ एहसान और मेहरबानी का मामला फ़रमाता है, हालाँकि उनकी हक़ीक़ी हालत इसके बरअक्स होती है और वे खुद इस हक़ीक़त से बेख़बर होते हैं। इसी तरह अल्लाह तआला उनसे आख़िरत के अज़ाब को पोशीदा रखता है, जिसकी वजह से वे यह गुमान करने लगते हैं कि अल्लाह उनसे राज़ी है, हालाँकि हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला ने उनके लिए अज़ाब मुक़द्दर कर रखा है। इंसानी नुक्ता-ए-नज़र से ऐसे तर्ज़-ए-अमल को इस्तिहज़ा, फ़रेब और तदबीर-ए-ख़फ़िया (चाल) से ताबीर किया जाता है, अगरचे अल्लाह तआला हर नक्स और ऐब से पाक है और उसके अफ़आल उसकी कामिल हिकमत के मुताबिक़ होते हैं।
The Prophet ﷺ indicated this interpretation by his words:	नबी करीम ﷺ ने अपने इस इरशाद के ज़रिये इस तफ़्सीर की तरफ़

‘When you see Allah Almighty, giving a person what he wants when he continues to perform acts of disobedience, that is part of drawing him on.’ Then he finished with this āyah: <i>‘When they forgot what they had been reminded of, We opened up for them the doors of everything, until, when they were exulting in what they had been given, We suddenly seized them and at once they were in despair. So the last remnant of the people who did wrong was cut off. Praise belongs to Allah, the Lord of the worlds.’</i> Some scholars say that the meaning of the āyah, <i>‘We will lead them on from where they do not know’</i>, is that when they commit a sin, they receive a blessing.	इशारा फ़रमाया: "जब तुम देखो कि अल्लाह तआला किसी शख्स को, उसकी मुसलसल नाफ़रमानी के बावजूद, वह चीज़ें अता किए जा रहा है जो वह चाहता है, तो यह इस्तिदराज (बतदरीज पकड़ की तरफ़ ले जाना) का हिस्सा है।" फिर आप ﷺ ने यह आयत तिलावत फ़रमाई: "फिर जब उन्होंने वह नसीहत भुला दी जो उन्हें दी गई थी, तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहाँ तक कि जब वह उन नेमतों पर खुश हो गए जो उन्हें दी गई थीं, तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया, और उसी वक़्त वह मायूस होकर रह गए। फिर ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गई, और तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।" बाज़ उलेमा ने कहा है कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान: <i>"हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता वहाँ से पकड़ की तरफ़ ले जाएँगे जहाँ से उन्हें शऊर भी न होगा।"</i>
--	--

	का मानी यह है कि जब वह कोई गुनाह करते हैं तो उसके बदले में उन्हें एक नेमत अता कर दी जाती है।
and drawing them on,	"और उन्हें आहिस्ता आहिस्ता अपनी गिरिफ्त की तरफ़ ले जाना।"
This phrase means allowing them a long period of respite, as we find in Allah's words: <i>'We only allow them more time so that they will increase in evildoing.'</i> The verbal root means increase. Yūnus ibn Ḥabīb said, 'It is said that Allah gives to them when they commit evil in just the same way that He gives to them when they do good. Allah Almighty says: <i>'We supplied you with property and sons.'</i> He says: <i>'We will supply them with fruit and meat they desire.'</i> Al-Akhfash said, 'It means to give.' Al-Farrā' and al-Laḥyānī said, 'It is to give more of the same. It is used giving support, as when you reinforce an army.' Allah says: <i>'with seven seas more.'</i>	यह इबारत इस मअनी में है कि उन्हें एक तवील मोहलत दी जाती है, जैसा कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है: "हम तो उन्हें सिर्फ़ इस लिए मोहलत देते हैं ताकि वह गुनाह में और बढ़ जाएँ।" इस लफ़्ज़ की अस्ल (माद्दा) बढ़ाने और इज़ाफ़ा करने के मअनी पर दलालत करती है। यूनुस बिन हबीब ने कहा: "कहा जाता है कि अल्लाह तआला उन्हें उस वक़्त भी अता करता है जब वह बुराई करते हैं, उसी तरह जैसे वह उन्हें नेकी करने पर अता करता है।" अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और हमने तुम्हें माल और औलाद के ज़रिये मदद दी।" और फ़रमाया:

	"और हम उन्हें उनकी पसंद के फलों और गोश्त से नवाज़ते रहेंगे।" अल-अख़फ़श ने कहा: "इस का मअनी है: अता करना।" और अल-फ़र्रा और अल-लहयानी ने कहा: "इस का मअनी है एक ही चीज़ में मज़ीद इज़ाफ़ा करना।" यह लफ़्ज़ मदद और तक्कवियत देने के मअनी में भी इस्तेमाल होता है, जैसे कहा जाता है कि किसी लश्कर को मज़ीद फ़ौजी भेज कर उसकी मदद की गई। अल्लाह तआला का फ़रमान है: "और उसके बाद सात समंदर मज़ीद उसकी मदद करें।"
they wander blindly	वह अंधेपन में भटकते फिरते हैं।
Mujahid said, 'They go to and fro, confused in disbelief.' The scholars of language use it for when someone is confused and vacillates. It is used for camels that do not know which way to go. 'Ama signifies blindness of the eyes and 'amah, as is used here, signifies blindness of the	मुजाहिद ने फ़रमाया: "वह कुफ़्र में हैरान व परेशान होकर इधर-उधर भटकते फिरते हैं।" अहल-ए-लुगत इस लफ़्ज़ को ऐसे शरख़्स के लिए इस्तेमाल करते हैं जो उलझन और तज़बज़ुब का शिकार हो, कभी एक तरफ़ माइल हो और

heart. We find in Revelation: <i>'It is not eyes that are blind but hearts in breasts that are blind.'</i>	कभी दूसरी तरफ़। यह लफ़्ज़ उन ऊँटों के बारे में भी बोला जाता है जो यह न जानते हों कि किस सिम्त जाना है। "अमा से मुराद आँखों की नाबीनाई है, जबकि "अमह — जैसा कि यहाँ इस्तेमाल हुआ है — दिल की नाबीनाई को ज़ाहिर करता है। वह्य-ए-इलाही में आता है: "हक़ीक़त यह है कि आँखें अंधी नहीं होतीं बल्कि वह दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।"
in their excessive insolence.	"अपनी हद से बढ़ी हुई सरकशी में।"
'Their disbelief and misguidance. The basic meaning of the words 'excessive insolence' comes from the idea of overflowing or going over the limits of something. We find the same root used in the words of the Almighty: <i>'When the waters rose'</i>, meaning rose high and overflowed the banks of the reservoir. It is also used of Pharaoh when Allah says: <i>'He overstepped'</i>, meaning that he was excessive in his claim	"उनका कुफ़्र और गुमराही।" "तुगयान" (हद से बढ़ जाने) का बुनियादी मफ़हूम किसी चीज़ के बह निकलने या अपनी हद से तजावुज़ कर जाने का है। इसी अस्ल से अल्लाह तआला का यह फ़रमान है: "जब पानी हद से बढ़ गया था।" यानी पानी बुलंद हो गया और अपने किनारों से तजावुज़ कर गया। इसी तरह यही लफ़्ज़ फ़िरऔन के बारे में भी इस्तेमाल हुआ है, जहाँ

when he said, '<i>I am your Lord Most High</i>,' The meaning in the āyah is to extend the length of their lives so that they increase in insolence and so that their punishment will in turn be increased.	अल्लाह तआला फ़रमाता है: "बेशक वह सरकशी में हद से बढ़ गया था।" यानी उसने अपने दावे में इतिहा कर दी, जब उसने कहा: "मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ।" इस आयत में मानी यह है कि अल्लाह तआला उन्हें मोहलत देता है और उनकी उम्रें दराज़ करता है ताकि वे अपनी सरकशी और गुमराही में और अधिक बढ़ जाएँ, और नतीजतन उनके अज़ाब में भी इज़ाफ़ा कर दिया जाए।
Those are the people who have sold guidance for misguidance. Their trade has brought no profit; they are not guided. [2:16]	"ये वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली। पस उनकी यह तिजारत कोई नफ़ा न दे सकी, और न ही वे हिदायत पाने वाले हुए।" (अल-बक़रह: 16)
Those are the people who have sold guidance for misguidance.	"ये वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली।"
Selling here is a metaphor. It means that these people have preferred disbelief to belief, because the act of buying and selling only occurs when someone desires one thing	यहाँ "फ़रोख़्त" बतौर-ए-इस्तिआरा इस्तेमाल हुई है। इसका मतलब यह है कि इन लोगों ने ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को तरजीह दी, क्योंकि ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त का अमल उसी वक़्त होता है जब कोई शख्स एक

rather than another. No real exchange is involved here, however, because the hypocrites are not really believers in the first place so in fact they have no faith to sell. Ibn ‘Abbās said, ‘They take misguidance and abandon guidance.’ It means that they choose disbelief over belief. The business metaphor is appropriate because buying and selling refer to replacing one thing with another and the Arabs used it in this way. Misguidance (<i>ḍalāl</i>) is bewilderment. Forgetfulness is called misguidance because of the confusion it entails. It can mean being forgotten. Death is also sometimes called misguidance as in Allah’s Words: <i>They said, “When we have been absorbed (ḍalāl) into the earth...”</i>	चीज़ को दूसरी चीज़ पर पसंद करे। अलबत्ता यहाँ हक़ीक़तन कोई तबादला मुराद नहीं, क्योंकि मुनाफ़िक़ दरअसल पहले से मोमिन ही नहीं होते कि उनके पास कोई ईमान हो जिसे वे बेच सकें। इब्न-ए-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: "उन्होंने गुमराही को इस्तियार किया और हिदायत को छोड़ दिया।" यानी उन्होंने ईमान के बजाय कुफ़्र को चुन लिया। तिजारत का यह इस्तिआरा निहायत मौज़ूँ है, क्योंकि ख़रीदना और बेचना एक चीज़ को दूसरी चीज़ के बदले इस्तियार करने के मानी में आता है, और अरब भी इस उस्लूब को इसी मफ़हूम में इस्तेमाल करते थे।
Their trade has brought no profit.	"उनकी तिजारत ने कोई नफ़ा नहीं दिया।"
Allah ascribed profit to trade since it is the custom of the Arabs to use terms related to	अल्लाह तआला ने नफ़अ (मनाफ़े) को तिजारत की तरफ़ मंसूब किया है, क्योंकि अरबों का दस्तूर था कि वे

commerce metaphorically in this context. It means that they have made no profit in the transaction they have made.	ऐसे मौकों पर तिजारत से मुतअल्लिक अल्फ़ाज़ को बतौर-ए-इस्तिआरा इस्तेमाल करते थे। इस का मतलब यह है कि उन्होंने जो सौदा किया, उसमें उन्हें कोई फ़ायदा हासिल नहीं हुआ, और न ही वे अपनी इस मामला-बाज़ी से कोई नफ़अ कमा सके।
They are not guided.	वह राह-ए-हिदायत पर नहीं हैं।
There is misguidance in the transaction they have made. It is said that is in the prior knowledge of Allah. Guidance is the opposite of misguidance.	उन्होंने जो सौदा किया है, उसमें गुमराही है। एक क़ौल यह है कि इससे मुराद वह गुमराही है जो अल्लाह तआला के अज़ली इल्म में उनके बारे में मुक़द्दर थी। और हिदायत, गुमराही की ज़िद (विपरीत) है।
Their likeness is that of people who light a fire, and then when it has lit up all around it, Allah removes their light and leaves them in darkness, unable to see. [2:17]	उनकी मिसाल उन लोगों की सी है जिन्होंने आग जलाई, फिर जब उस आग ने अपने इर्द-गिर्द की हर चीज़ को रौशन कर दिया तो अल्लाह तआला ने उनकी रौशनी सलब कर ली और उन्हें अंधेरो में छोड़ दिया, इस हाल में कि वे कुछ देख नहीं सकते। [अल-बक्ररह: 17]
Some of this āyah is in the	इस आयत का कुछ हिस्सा एकवचन

singular and some in the plural. Some people say that the word <i>alladhī</i>, which is usually singular, has a plural meaning here and means people who light, and this is borne out by the fact that the āyah begins and ends with the plural usage of 'their' and 'them'. Others say that the singular is used because it only takes one person to actually light the fire among the group who undertake to do it. When the light is gone, the effect is the same for all of them and so Allah says: <i>'their light'</i>. The pronoun 'their' refers to the hypocrites and this depicts their state in the Next World, as Allah does in another place when He says: <i>'A wall will be erected between them with a gate in it.'</i> Someone who lights a fire in darkness can only see a short distance, just as the hypocrite remains lost in his confusion and vacillation.	(सिंगुलर) में है और कुछ बहुवचन (प्लूरल) में। कुछ लोगों का कहना है कि (अल्लाही) शब्द, जो सामान्यतः एकवचन के लिए आता है, यहाँ बहुवचन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है और इसका मतलब है: "वे लोग जिन्होंने आग जलाई"। इसकी पुष्टि इस बात से भी होती है कि आयत की शुरुआत और अंत "उनका" और "उन्हें" जैसे बहुवचन शब्दों से हुआ है। दूसरों का कहना है कि एकवचन का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि आग जलाने का कार्य करने वाले समूह में वास्तव में केवल एक व्यक्ति का आग जलाना ही पर्याप्त होता है। फिर जब रोशनी समाप्त हो जाती है तो उसका प्रभाव उन सब पर समान रूप से पड़ता है, इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उनकी रोशनी"। "उनकी" की सर्वनाम (ज़मीर) मुनाफ़िकों की ओर लौटती है, और यह आखिरत में उनकी अवस्था को चित्रित करती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने एक अन्य स्थान पर
--	---

	फ़रमाया है: "उनके बीच एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा।" जो व्यक्ति अँधेरे में आग जलाता है, वह केवल थोड़ी दूर तक ही देख सकता है। इसी प्रकार मुनाफ़िक़ भी अपनी उलझन, संशय और डाँवाडोल स्थिति में भटका हुआ रहता है।
The āyah is a metaphor which illustrates the true reality of the hypocrites. They make a show of faith taking advantage of the judgments of Islam in respect of marriage, inheritance, booty, and other such things and giving security to themselves, their children and their property. This is like someone who lights a fire on a dark night and it gives him just enough light to see what he needs to protect himself. But when it goes out he is no longer safe from harm and he becomes confused. That is how the hypocrites are when they imagine that they are deceiving the believers by uttering the Words of Islam. Then, after	यह आयत एक तम्सील (इस्तिआरा) है जो मुनाफ़िक़ों की हक़ीक़ी हालत को वाज़ेह करती है। वे ईमान का इज़हार करते हैं ताकि इस्लाम के अहक़ाम से फ़ायदा उठा सकें, जैसे निकाह, विरासत, माल-ए-ग़नीमत और दूसरे मुआमलात में हासिल होने वाले हुकूक़, और इस तरह अपने आप, अपनी औलाद और अपने माल को तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम कर सकें। उनकी मिसाल ऐसे शख्स की सी है जो तारीक़ रात में आग जलाता है और वह आग उसे इतनी रौशनी दे देती है कि वह अपनी हिफ़ाज़त के लिए ज़रूरी चीज़ें देख सके। लेकिन जब वह आग बुझ जाती है तो वह नुक़सान से महफूज़ नहीं रहता और हैरत व परेशानी में मुब्तला हो जाता

they die, they will go to the painful punishment since, <i>'The hypocrites are in the lowest level of the Fire'</i> and their light vanishes. They say, <i>'Let us borrow some of your light.'</i> It is said that the approach and words of the hypocrites to the Muslims are like fire and their turning from love of them and their reversal is like its extinguishing. Others things are said. The word for fire (<i>nār</i>) is derived from the word for light (<i>nūr</i>), as fire gives light. The plural of <i>nūr</i> is <i>anwār</i> and that of <i>nār</i> is <i>nīrān</i>. <i>Zulumāt</i> is the plural of <i>zulmah</i> (darkness).	है। मुनाफ़िकों की हालत भी यही है। वे यह गुमान करते हैं कि इस्लाम के कलिमात ज़बान से अदा करके वे मोमिनों को धोखा दे रहे हैं, लेकिन जब वे मर जाएँगे तो दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला होंगे, क्योंकि: "बेशक मुनाफ़िक जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में होंगे।" उस वक़्त उनकी रौशनी ख़त्म हो जाएगी, और वे कहेंगे: "हमें अपनी रौशनी में से कुछ लेने दो।" एक क़ौल यह भी है कि मुनाफ़िकों का मुसलमानों के करीब आना और उनसे अच्छी बातें करना आग की मानिंद है, जबकि उनकी मुहब्बत से फिर जाना और अपने रवय्ये को बदल लेना उस आग के बुझ जाने के मुशाबेह है। इसके अलावा भी दीगर अक़वाल बयान किए गए हैं। नार (आग) का लफ़्ज़ नूर (रौशनी) से माखूज़ है, क्योंकि आग रौशनी फ़राहम करती है। नूर की जमा अनवार है और नार की
---	--

	जमा नीरान है। इसी तरह जुलुमात, जुल्मह (अंधेरा) की जमा है।
Deaf, dumb, blind. They will not return. [2:18]	वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं; पस वे (हक़ की तरफ़) वापस नहीं लौटेंगे। [अल-बक्ररह: 18]
It means that they are deaf. The reading of ‘Abdullāh ibn Mas‘ūd and Ḥafṣah has it in the accusative which can be for censure. The word for deafness in Arabic (<i>ṣimām</i>) comes from a word which means to be blocked, like a canal which is silted up or like a vial with a stopper in it. So a deaf person is someone whose hearing is blocked up. The word for dumb (<i>bukm</i>) used here refers to those who cannot speak or understand. If someone can understand, the word used is <i>akhras</i>. It is also said that they mean the same thing. The word ‘<i>umy</i> (blind) is used of those who have lost their sight. It is also said that someone is ‘blind’ when he is confused. What is meant here is not the	इसका मतलब यह है कि वे बहरे हैं। अब्दुल्लाह बिन मसऊद और हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की क़िराअत में यह लफ़्ज़ मन्सूब (नसब के साथ) आया है, और यह उस्तूब मज़म्मत और सरज़निश के लिए इस्तेमाल होता है। अरबी में बहरेपन के लिए इस्तेमाल होने वाला लफ़्ज़ ऐसे मादे से निकला है जिसका अर्थ बंद हो जाना या मस्टूद हो जाना है, जैसे कोई नहर या नाली मिट्टी से भरकर बंद हो जाए, या कोई शीशी ढक्कन लगाकर बंद कर दी जाए। चुनाँचे बहरा व्यक्ति वह है जिसकी समाअत बंद हो गई हो। यहाँ (गूँगे) से मुराद वे लोग हैं जो न बोल सकते हों और न समझ सकते हों। अगर कोई व्यक्ति समझता तो हो लेकिन बोल न सकता हो, तो उसके लिए का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जाता

actual senses themselves, rather what is intended is the negation of the ability to perceive the truth. Qatādah said of this that they are deaf to hearing the truth, dumb to speaking it and blind to seeing it. This meaning was used by the Prophet ﷺ in describing the ruler when the Final Hour is near in the hadith of Jibrīl. Allah knows best.	है। एक क़ौल यह भी है कि दोनों अल्फ़ाज़ एक ही मानी रखते हैं। (अंधे) का लफ़्ज़ उन लोगों के लिए बोला जाता है जिनकी बीनाई ख़त्म हो चुकी हो। यह भी कहा गया है कि जब कोई व्यक्ति हैरत और उलझन में मुब्तला हो तो उसे भी मज़ाज़न अंधा कहा जाता है। यहाँ हक़ीक़ी हवास-ए-ख़म्सा मुराद नहीं हैं, बल्कि मक़सूद यह है कि इनमें हक़ को पहचानने और कुबूल करने की सलाहियत नहीं रही। क़तादा रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया: "वे हक़ को सुनने के एतिबार से बहरे हैं, हक़ बात कहने के एतिबार से गुँगे हैं, और हक़ को देखने के एतिबार से अंधे हैं।" इसी मानी को नबी करीम ﷺ ने भी हदीस-ए-जिब्रील में कुर्ब-ए-क्रियामत के ज़माने के हुक्मरान की सिफ़त बयान करते हुए इस्तेमाल फ़रमाया है। और अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है।
They will not return.	वे (हक़ की तरफ़) वापस नहीं लौटेंगे।
They will not return to the	वे हक़ की तरफ़ वापस नहीं लौटेंगे।

truth. Allah says this from the position of His prior knowledge of them.	अल्लाह तआला ने यह बात उनके बारे में अपने अज़ली इल्म की बिना पर फ़रमाई है।
Or that of a storm-cloud in the sky, full of darkness, thunder and lightning. They put their fingers in their ears against the thunderclaps, fearful of death. Allah encompasses the unbelievers. [2:19]	या (उनकी मिसाल) आसमान से बरसने वाली एक बारिश की सी है, जिसमें घुप अँधेरे, गरज और चमक हो। वे मौत के डर से कड़क की आवाज़ों के सबब अपनी उँगलियाँ अपने कानों में ठूँस लेते हैं, हालाँकि अल्लाह काफ़ि़रों को हर तरफ़ से घेरे हुए है। [अल-बक्रह: 19]
Or that of a storm-cloud in the sky,	या (उनकी मिसाल) आसमान में छाए हुए एक बारिश वाले बादल की सी है।
At-Tabari says that the ‘or’ here, in fact, means ‘and’, and it is also said that the ‘or’ is in order to give a choice between the two neighbours so as not to confine the description of the hypocrites to just one of them.	इमाम तबरी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि यहाँ "औ" (या) दरअसल "व" (और) के मानी में है। एक और क़ौल यह है कि "औ" यहाँ इस लिए लाया गया है कि दोनों मिसालों में से किसी एक के साथ मुनाफ़िक़ों की सिफ़त को ख़ास न कर दिया जाए, बल्कि इन दोनों मिसालों के दरमियान इख़्तियार और तनव्वी' का मफ़हूम पैदा हो, ताकि मुनाफ़िक़ों के मुख़लिफ़ अहवाल को बयान किया जा सके।
The word for sky, <i>sama</i> ,	समा का लफ़ज़, जिसके मानी

which means sky or heaven, is everything that is above you and covers you. So the roof of a house is sometimes called <i>samā'</i>. The word can also designate the rain because rain descends from the sky. Herbage is also sometimes called <i>samā'</i> in Arabic because it covers the ground. Heaven is what is above and the earth is what is underneath.	आसमान या जन्नत के हैं, हर उस चीज़ पर बोला जाता है जो तुम्हारे ऊपर हो और तुम्हें ढाँपे हुए हो। इसी वजह से कभी घर की छत को भी समा कहा जाता है। यह लफ़्ज़ बारिश के लिए भी इस्तेमाल होता है, क्योंकि बारिश आसमान से नाज़िल होती है। इसी तरह अरबी में कभी सब्ज़ा और घास को भी समा कहा जाता है, क्योंकि वे ज़मीन को ढाँप लेते हैं। पस आसमान वह है जो ऊपर हो, और ज़मीन वह है जो नीचे हो।
full of darkness, thunder and lightning.	तारीकी, गरज और चमक से भरा हुआ।
The word <i>zumulāt</i> (darkness) is in the plural, indicating both the darkness of night and the darkness of the clouds which are piled up.	जुलुमात (तारीकियाँ) का लफ़्ज़ जमा के सीगे में आया है, जिससे मुराद रात की तारीकी भी है और उन गहरे और तह-दर-तह जमा होने वाले बादलों की तारीकी भी।
Scholars disagree about what thunder is. Aṭ-Ṭirmidhī reports that Ibn 'Abbās said, 'The Jews asked the Prophet ﷺ what thunder was. He said, "One of the angels is entrusted with the clouds and wields a fiery sword	उलमा के दरमियान रअ्द (गरज) की हक़ीक़त के बारे में इख़्तिलाफ़ है। इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है कि इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया: "यहूदियों ने नबी करीम ﷺ से पूछा

with which he drives the clouds wherever he wishes.” They asked, “What is this sound we hear?” He answered, “He hits the clouds when he pushes them until they go wherever Allah has commanded.” They said, “You have spoken the truth.” It is a long hadith. Many scholars accept this explanation. Thunder is the name of the sound heard. ‘Alī said that. It is reported from Ibn ‘Abbās that it is a wind caught between the clouds which causes that sound.	कि रअ्द क्या है? आप ﷺ ने फ़रमाया: ‘यह फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता है जो बादलों पर मुकर्रर है। उसके हाथ में आग का एक कोड़ा (या आग की तलवार) है, जिसके ज़रिये वह बादलों को हाँकता है और जहाँ अल्लाह चाहता है उन्हें ले जाता है।’ उन्होंने पूछा: ‘फिर यह आवाज़ क्या है जो हम सुनते हैं?’ आप ﷺ ने फ़रमाया: ‘यह उसके बादलों को झिड़कने और हाँकने की आवाज़ है, यहाँ तक कि वे वहाँ पहुँच जाएँ जहाँ अल्लाह ने उन्हें जाने का हुक्म दिया है।’ इस पर उन्होंने कहा: ‘आपने सच फ़रमाया।’ यह एक तवील हदीस का हिस्सा है। बहुत से उलमा ने इसी तफ़्सीर को इस्तिyार किया है। एक क़ौल यह है कि रअ्द दरअसल उसी आवाज़ का नाम है जो सुनाई देती है। यह क़ौल हज़रत अली
---	--

	रज़ियल्लाहु अन्हु से मनकूल है। और इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से यह भी रिवायत किया गया है कि रअ्द एक ऐसी हवा है जो बादलों के दरमियान महसूर हो जाती है और उसी के बाइस यह आवाज़ पैदा होती है।
They also disagree about lightning. It is reported from ‘Alī, Ibn Mas‘ūd and Ibn ‘Abbās that lightning comes from the iron bar in the hand of an angel with which he drives the clouds. This is the literal meaning of the hadith of at-Tirmidhī. Ibn ‘Abbās also said that it is a whip of fire in the hand of an angel with which he drives the clouds.	उलमा के दरमियान बर्क (बिजली) की हक़ीक़त के बारे में भी इख़्तिलाफ़ है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि बर्क उस लोहे के आले या सलाख से पैदा होती है जो एक फ़रिश्ते के हाथ में होती है, और वह उसके ज़रिये बादलों को हाँकता है। इमाम तिरमिज़ी की हदीस का ज़ाहिरी मफ़हूम भी यही है। इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से यह भी मनकूल है कि बर्क दरअसल आग का एक कोड़ा है जो एक फ़रिश्ते के हाथ में होता है, और वह उसके ज़रिये बादलों को हाँकता है।
Scientists say that thunder is the sound of the collision of the clouds and lightning is what is	बाज़ अहल-ए-तबीयात (साइंसदानों) का कहना है कि रअ्द बादलों के बाहमी टकराव से पैदा होने वाली

sparked by their collision. This is rejected and not transmitted and Allah knows best. It is said that the root of thunder (<i>ra'd</i>) means movement. Hence <i>ri'did</i> is used for a coward. One form of the word means to tremble. The root of the word for lightning, <i>barq</i>, means 'glittering' and 'a bright light'. Associated with that is <i>Burāq</i>, the animal that the Messenger of Allah ﷺ rode in the Night Journey and which the Prophets before him rode. The sky trembles from thunder and flashes light with lightning.	आवाज़ है, और बर्क़ वह चिंगारी है जो इस टकराव के नतीजे में पैदा होती है। मुसन्निफ़ के नज़दीक यह क़ौल क़ाबिल-ए-क़बूल नहीं, इसकी कोई मोतबर रिवायत मनकूल नहीं, और हक़ीक़त का इल्म अल्लाह तआला ही को है। यह भी कहा गया है कि रअ़्द का माद्दा हरकत और इज़्तिराब के मानी पर दलालत करता है। इसी मुनासबत से रिदीद का लफ़्ज़ बुज़दिल शख़्स के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसी माद्दे की एक सूरत का मानी काँपना और लरज़ना भी है। और बर्क़ का माद्दा चमकने, जगमगाने और रौशन नूर के मानी देता है। इसी से बुराक़ का नाम माखूज़ है, जो वह सवारी थी जिस पर रसूलुल्लाह ﷺ ने शब-ए-मेराज सफ़र फ़रमाया, और आप से पहले अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम भी उस पर सवार होते थे। पस आसमान रअ़्द के ज़रिये गूँजता और लरज़ता है, और बर्क़ के ज़रिये
---	---

	चमकता और रौशनी बिखेरता है।
Ibn ‘Abbās reported, ‘We were with ‘Umar ibn al-Khaṭṭāb on a journey between Madīna and Syria with Ka‘b al-Aḥbār. There was a wind and then rain, strong wind and hail. The people separated. Ka‘b told me, “If someone hears the thunder and then says, ‘Glory be to the One Whom the thunder glorifies His praise and the angels from fear of Him,’ he is safe from what is in these clouds, hail and thunderclaps.” I said it as did Ka‘b. In the morning the people gathered and I said to ‘Umar, “Amīr al-Mu’mīnīn, we were in a different situation to everyone else.” “And why is that?” he asked. I told him the hadith of Ka‘b. He said, “Glory be to Allah! Why didn’t you tell us so that we could say the same as you said!”” Ibn ‘Umar reported about the Prophet ﷺ, ‘When he heard thunder and lightning, he said, “O Allah, do not kill us with Your anger or	इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं: "हम मदीना और शाम के दरमियान एक सफ़र में हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे, और कअब अल-अहबार भी हमारे साथ थे। अचानक तेज़ हवा चली, फिर बारिश हुई, आँधी आई और ओले बरसने लगे। लोग इधर-उधर बिखर गए। कअब अल-अहबार ने मुझसे कहा: 'जो शख्स गरज की आवाज़ सुनकर यह कहे: (पाक है वह ज़ात जिसकी हम्द के साथ रअ्द तस्बीह करता है और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ़ से तस्बीह करते हैं), तो वह इन बादलों में मौजूद आफ़तों, ओलों और कड़कों से महफूज़ रहेगा।' मैंने भी यह दुआ पढ़ी और कअब ने भी पढ़ी। सुबह जब लोग जमा हुए तो मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से

destroy us with Your punishment, and protect us from them.””	कहा: 'ऐ अमीरुल-मोमिनीन! हमारी हालत बाक़ी लोगों से मुख़्तलिफ़ रही थी।' उन्होंने पूछा: 'वह कैसे?' मैंने उन्हें कअब की यह रिवायत सुनाई। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: 'सुब्हानल्लाह! तुमने हमें यह बात क्यों न बताई ताकि हम भी वही कलिमात पढ़ लेते जो तुमने पढ़े थे!'" और इब्र उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ जब गरज और बिजली की आवाज़ और चमक सुनते तो यह दुआ फ़रमाया करते थे: "ऐ अल्लाह! हमें अपने ग़ज़ब के ज़रिये हलाक न कर, और न अपने अज़ाब के ज़रिये हमें तबाह कर, और इससे पहले हमें आफ़ियत अता फ़रमा।"
They put their fingers in their ears	वह अपनी उँगलियाँ अपने कानों में डाल लेते हैं।
So that they will not hear the	ताकि वे कुरआन को न सुनें, और

Qur'an and thereby believe in it and in Muḥammad ﷺ. That was disbelief for them and disbelief is death.	उसके नतीजे में उस पर और हज़रत मुहम्मद ﷺ पर ईमान न ले आएँ। यही उनके लिए कुफ़्र था, और कुफ़्र (रूहानी एतिबार से) मौत के मुतरादिफ़्र है।
against the thunderclaps,	कड़कों से बचने के लिए।
To protect them from the thunderclaps. Ibn ‘Abbās, Mujāhid and others said that, when the force of the thunder is very strong, there is an angel who wields the fire from within, which is the lightning. Al-Khalīl said, ‘It is the strong event arising from the sound of the thunder which is accompanied by flashes of fire which burn what they strike.’ Abū Zayd said, ‘The fire that falls from the sky is strong thunder.’ The word ‘thunderclaps’ is also used for the blast and ‘the Shout’ which is a punishment with which Allah strikes the unbelievers. Allah says: <i>‘The lightning-bolt of the humiliating punishment’</i> ‘seized them.’ The verb <i>ṣu‘iqā</i> means to faint as in And Allah	"बिजली की कड़क से अपने आप को बचाने के लिए।" अब्दुल्लाह बिन अब्बास, मुजाहिद बिन जब्र और अन्य अहल-ए-इल्म ने कहा है कि जब गरज की आवाज़ बहुत शदीद हो जाती है तो एक फ़रिश्ता उसके अंदर मौजूद आग को चलाता है, और यही आग बिजली (चमक) की सूरत में ज़ाहिर होती है। अल-खलील बिन अहमद अल-फ़राहीदी ने कहा: "यह एक निहायत शदीद वाक़िआ है जो गरज की आवाज़ से पैदा होता है, और इसके साथ आग की चमकें होती हैं जो जिस चीज़ पर गिरती हैं उसे जला देती हैं।" अबू ज़ैद ने कहा: "आसमान से गिरने वाली आग ही शदीद कड़क (साइक्रा) है।"

says: <i>'those in the earth will lose consciousness'</i> which means that they will die.	लफ़ज़ "साइक़ा" (कड़क) का इस्तेमाल उस ज़ोरदार धमाके और "चीख़" (अस-सैहह) के लिए भी होता है जो अल्लाह तआला की तरफ़ से अज़ाब के तौर पर काफ़िरों पर नाज़िल होती है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "फिर उन्हें ज़िल्लत देने वाले अज़ाब की कड़क ने आ पकड़ा।" फ़े'ल «सुइक़ा» का मअनी बेहोश हो जाना भी है। और अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और जो आसमानों और ज़मीन में हैं, सब बेहोश हो जाएँगे।" यानी इससे मुराद यह है कि वे सब मर जाएँगे।
In this āyah Allah likens the states of the hypocrites to the darkness, lightning and thunderclaps which are found in a cloudburst. Darkness resembles their disbelief, and thunder and lightning is like what they fear. Blindness is also darkness. It contains a threat and rebuke, which is the thunder, and radiant proofs,	इस आयत में अल्लाह तआला ने मुनाफ़िक़ों के अहवाल को उस तारीकी, बिजली और कड़क से तश्बीह दी है जो मूसलाधार बारिश वाले बादल में पाई जाती हैं। तारीकी उनके कुफ़्र के मुशाबिह है, और गरज और बिजली उस चीज़ की मानिंद हैं जिससे वे ख़ौफ़ खाते हैं। अंधापन भी एक क्रिस्म की तारीकी

which can be dazzling like the lightning. The thunderclaps represent what the Qur'an contains of being summoned to fight and the threat of the punishment in the Hereafter. It is said that the 'thunderclaps' are the burdens of the Sharī'ah which they hate, such as <i>jihād</i>, <i>zakāt</i> and other things.	है। कुरआन में धमकी और सरज़निश भी है, जो गरज की मानिंद है, और रोशन दलीलें व बराहीन भी हैं, जो अपनी चमक और ताबानी में बिजली की तरह खीरा कर देने वाली हो सकती हैं। कड़क (सवाइक़) उस बात की नुमाइंदगी करती है जो कुरआन में जिहाद के लिए बुलाने और आखिरत के अज़ाब की वईद के बारे में मौजूद है। एक क़ौल यह भी है कि "सवाइक़" से मुराद शरीअत की वे ज़िम्मेदारियाँ और अहकाम हैं जिन्हें मुनाफ़िक़ नापसंद करते हैं, जैसे जिहाद, ज़कात और दूसरे शरई फ़राइज़।
Allah encompasses the unbelievers.	"अल्लाह तआला काफ़िरों को अपने अहाता-ए-कुदरत में लिए हुए है।"
They cannot evade Him. This linguistic term is used when someone is hemmed in on all sides. Allah encompasses all creatures, meaning they are in His grasp and under His power. This means that He knows everything about them. It is	"वह उससे बचकर निकल नहीं सकते।" अरबी ज़बान में यह ताबीर उस वक़्त इस्तेमाल होती है जब कोई शख्स हर तरफ़ से घिरा हुआ हो और उसके लिए निकलने की कोई राह न हो। अल्लाह तआला तमाम मख़लूक़ात

said that it means He will destroy them and bring them all together. The unbelievers are singled out because they were mentioned earlier in the āyah, and Allah knows best.	का अहाता किए हुए है, यानी वे सब उसकी गिरफ्त और उसकी कुदरत के तहत हैं। इसका एक मअनी यह भी है कि अल्लाह तआला उनके तमाम अहवाल और उमूर को खूब जानता है। यह भी कहा गया है कि इससे मुराद यह है कि अल्लाह तआला उन्हें हलाक कर देगा और सब को एक जगह जमा करेगा। इस आयत में ख़ास तौर पर काफ़िरों का ज़िक्र किया गया है, क्योंकि आयत के पहले हिस्से में उन्हीं का तज़क़िरा हुआ है। और अल्लाह तआला ही सबसे ज़्यादा जानने वाला है।
The lightning all but takes away their sight. Whenever they have light, they walk in it but whenever darkness covers them, they halt. If Allah wished, He could take away their hearing and their sight. Allah has power over all things. [2:20]	"क़रीब है कि बिजली उनकी बीनाई उचक ले जाए। जब कभी वह उनके लिए रौशनी करती है तो वे उसमें चल पड़ते हैं, और जब उन पर अँधेरा छा जाता है तो वे ठहर जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे तो उनकी समाअत और उनकी बीनाई को सलब कर ले। बेशक अल्लाह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।"

	[अल-बकरह: 20]
The lightning all but takes away their sight.	"क़रीब है कि बिजली उनकी बीनाई उचक ले जाए।"
The word for 'take away' (<i>khaṭafa</i>) used here means taking extremely quickly or snatching. It is used of birds of prey because of their speed. If one takes the Qur'anic metaphor of lightning as indicating alarm, the expression means that their fear of what will happen to them almost takes away their sight. If one takes it as indicating the Qur'anic commands to the believers, it means that it is those which nearly blind them. <i>Yakhtafu</i> and <i>yakhtifu</i> are two dialectical forms that are recited. <i>Abṣār</i> (sight) is the plural of <i>baṣar</i>, the faculty of sight. If 'lightning' is metaphorical, then it means that their fear of what befalls them almost removes their sight.	लफ़ज़ "यख़्तफ़ु" (उचक लेना, झपट लेना) जो यहाँ इस्तेमाल हुआ है, उसका मअनी है बहुत तेज़ी से किसी चीज़ को ले लेना या झपट कर छीन लेना। यह लफ़ज़ शिकारी परिंदों के लिए भी इस्तेमाल होता है, क्योंकि वे अपनी तेज़ रफ़्तारी से शिकार को उचक लेते हैं। अगर कुरआनी तम्सील में बिजली से मुराद ख़ौफ़ और दहशत को लिया जाए, तो इस इबारत का मतलब यह होगा कि जो कुछ उन पर आने वाला है, उसका ख़ौफ़ क़रीब है कि उनकी बीनाई सलब कर ले। और अगर बिजली से मुराद कुरआन के वे अहकाम लिए जाएँ जो अहल-ए-ईमान को दिए गए हैं, तो मअनी यह होगा कि वे अहकाम ऐसे हैं जो क़रीब है कि उन्हें अंधा कर दें (यानी उन्हें सख़्त नागवार गुज़रें और हैरत में डाल दें)। लफ़ज़ «यख़्तफ़ु» और «यख़िफ़ु»

	दोनों किराअतें मरवी हैं, जो अरबी की दो मुख्तलिफ़ लुगवी सूरतें हैं। "अबसार", "बसर" की जमअ है, और इससे मुराद बीनाई या देखने की कुव्वत है। और अगर "बिजली" को मजाज़ी मअनी में लिया जाए तो इसका मफ़हूम यह होगा कि उन पर आने वाली मुसीबतों और हालात का ख़ौफ़ क़रीब है कि उनकी बीनाई को ज़ाइल कर दे।
Whenever they have light, they walk in it but whenever darkness covers them, they halt.	"जब कभी उनके लिए रौशनी होती है तो वे उसमें चल पड़ते हैं, और जब उन पर अँधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं।"
Al-Mubarrad says that what is implied is: 'Whenever the lightning lights up the road for them.' The meaning is that when they hear āyahs of the Qur'an which they understand and agree with, they accept them and act by them. But when some āyahs are revealed about which they are confused and which they do not understand or find burdensome, they 'halt', in other words they	अल-मुबर्रद कहते हैं कि यहाँ महज़ूफ़ इबारत यह है: "जब भी बिजली उनके लिए रास्ते को रौशन कर देती है।" इसका मतलब यह है कि जब मुनाफ़िक़ कुरआन की ऐसी आयात सुनते हैं जिन्हें वे समझ लेते हैं और जिनसे उन्हें मुवाफ़क़त होती है, तो वे उन्हें क़बूल कर लेते हैं और उन पर अमल भी करते हैं। लेकिन जब ऐसी आयात नाज़िल होती

remain fixed in their hypocrisy, as Ibn ‘Abbās said. It is said that the meaning is that, when their crops and cattle were flourishing and they had continuous blessings, they said, ‘The dīn of Muḥammad is a blessed dīn.’ But when hardship befell them and difficulties afflicted them, they became angry and remained fixed in their hypocrisy, as Ibn Mas‘ūd and Qatādah said. The soundness of this is indicated by the words of the Almighty: <i>‘Among the people there is one who worships Allah right on the edge. If good befalls him, he is content with it, but if trial befalls him, he reverts to his former ways.’</i>	हैं जिनके बारे में वे उलझन में पड़ जाते हैं, या उन्हें समझ नहीं पाते, या वे उन्हें बोझिल महसूस होती हैं, तो वे "ठहर जाते हैं"; यानी अपने निफ़ाक़ पर क़ायम रहते हैं, जैसा कि इब्र अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने फ़रमाया। एक क़ौल यह भी है कि इसका मतलब यह है कि जब उनकी खेतियाँ सरसब्ज़ रहती थीं, उनके मवेशी बढ़ते रहते थे और उन पर मुसलसल नेमतें नाज़िल होती थीं, तो वे कहते थे: "मुहम्मद ﷺ का दीन बड़ा बाबरकत दीन है।" लेकिन जब उन पर कोई सख़्ती आती, या मुसीबतें और मुश्किलात नाज़िल होतीं, तो वे नाराज़ हो जाते और अपने निफ़ाक़ पर जमे रहते, जैसा कि इब्र मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और क़तादा रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया। इस तफ़्सीर की ताईद अल्लाह तआला के इस फ़रमान से भी होती है: "और लोगों में कोई ऐसा भी है जो किनारे पर रह कर अल्लाह की इबादत करता है। अगर उसे कोई
--	--

	भलाई पहुँचे तो उस पर मुतमइन हो जाता है, और अगर उसे कोई आजमाइश पहुँचे तो अपने पहले हाल की तरफ़ पलट जाता है।"
Sufi scholars say that this is a metaphor which Allah made for someone whose initial state is made unsound by a self-seeking intention and who, because of that, lays claim to the states of the great. His initial state would have continued to give him illumination if it had remained sound by being accompanied by correct manners. But when he adulterates it with false claims, Allah removes its light from him and he remains in the darkness of his false claims, not seeing any way to emerge from them.	देवनागरी लिपि में उर्दू उच्चारण के अनुसार: सूफ़ी उलेमा कहते हैं कि यह एक तम्सील (इस्तिआरा) है जिसे अल्लाह तआला ने उस शख्स के लिए बयान फ़रमाया है जिसकी इब्तिदाई रूहानी हालत ख़ुदगर्ज़ नियत की वजह से बिगड़ जाती है, और जो इसी बिना पर औलियाए-कामिलीन की रूहानी कैफ़ियात का दावा करने लगता है। अगर उसकी इब्तिदाई हालत सही आदाब और दुरुस्त तर्ज़-ए-अमल के साथ बरक़रार रहती तो वह उसे नूर और बसीरत अता करती रहती। लेकिन जब वह उसमें झूठे दावे शामिल कर देता है तो अल्लाह तआला उससे उसका नूर छीन लेता है, और वह अपने बातिल दावों की तारीकी में रह जाता है, यहाँ तक कि उसे उनसे निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता।
It is also related from Ibn ‘Abbās that the people meant	देवनागरी लिपि में उर्दू उच्चारण के अनुसार:

here are the Jews since, when the Prophet ﷺ was victorious at Badr, they were greedy and said, ‘This, by Allah, is the Prophet of whom Mūsā gave good news. There is no banner which will resist him.’ When he suffered a reverse at Uḥud, they went back on that and were full of doubt. This is weak. The āyah is about the hypocrites, and this is sounder from Ibn ‘Abbās. The meaning can apply to all.	इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से यह भी रिवायत किया गया है कि यहाँ जिन लोगों का ज़िक्र है उनसे मुराद यहूद हैं, क्योंकि जब नबी करीम ﷺ को गज़वा-ए-बद्र में फ़तह हासिल हुई तो वह लालच और तवक्को में मुबतला हो गए और कहने लगे: "अल्लाह की क़सम! यही वह नबी हैं जिनकी बशारत मूसा अलैहिस्सलाम ने दी थी। कोई झंडा (लश्कर) ऐसा नहीं जो उनके मुक़ाबले में ठहर सके।" लेकिन जब उहुद में मुसलमानों को एक वक्ती नुक़सान और पसपाई का सामना करना पड़ा तो वह अपनी इस बात से फिर गए और शक व शुबह में मुबतला हो गए। ताहम यह रिवायत ज़ईफ़ है। यह आयत मुनाफ़िक़ीन के बारे में है, और इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मनकूल यही तफ़्सीर ज़्यादा सहीह है। अलबत्ता आयत का मफ़हूम इन सब पर मुनतबिक़ हो सकता है।
If Allah wished, He could take away their hearing and their sight.	अगर अल्लाह चाहे तो उनकी समाअत और उनकी बीनाई सलब कर ले।
This means that, if Allah had	इसका मतलब यह है कि अगर

wished, he could have informed the believers about them and removed the protection and power of Islam from them by overwhelming them, killing them and expelling them from their homes. Hearing and sight are specifically mentioned since they were already mentioned in the āyah or because they are the noblest senses of the human body.	अल्लाह चाहता तो वह मोमिनों को उन (मुनाफ़िकों) के बारे में आगाह कर देता, और उन पर ग़लबा देकर, उन्हें क़त्ल करवा कर और उनके घरों से निकाल कर उनसे इस्लाम की पनाह और ताक़त छीन लेता। समाअत और बीनाई का ख़ास तौर पर ज़िक्र इसलिए किया गया है कि उनका ज़िक्र पहले ही आयत में आ चुका था, या इसलिए कि ये इंसानी जिस्म के हवास में सबसे ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ और अहम हवास हैं।
Allah has power over all things.	बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।
This is general. According to the <i>mutakallimūn</i>, it means that it is permitted to describe Allah with the attribute of power. The Community agree that Allah has the name al-Qadīr, the Powerful. He is described as <i>Qadīr</i>, <i>Qādir</i> and <i>Muqtadir</i>. <i>Qadīr</i> is more intensive than <i>Qādir</i>. Az-Zajjājī said that. Al-Harawī said that they mean the same. Allah has power over every possibility whether it is brought into existence or	यह एक आम और जामे बयान है। मुतकल्लिमीन के नज़दीक इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला को सिफ़त-ए-कुदरत के साथ मुत्तसिफ़ करना जायज़ है। उम्मत-ए-मुस्लिमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि अल्लाह तआला के नामों में "अल-क़दीर" (बड़ी कुदरत वाला) शामिल है। अल्लाह तआला को "क़दीर", "क़ादिर" और "मुक्तादिर" के औसाफ़ से भी बयान किया जाता है। इमाम ज़ज्जाजी ने कहा है कि

remains non-existent. All responsible people are obliged to know that Allah possesses the power to act as He wills and He does whatever He wishes according to His knowledge and choice. They must also know that human beings possess a certain limited power through which they obtain what Allah has decreed for them by the use of normal means, but this power is not self-generated.	"क्रदीर", "क्रादिर" के मुक्राबले में ज़्यादा मुबालगा और शिद्दत पर दलालत करता है, जबकि हरवी ने कहा है कि दोनों के मानी एक ही हैं। अल्लाह तआला हर मुमकिन चीज़ पर कुदरत रखता है, ख़्वाह वह वुजूद में आए या अदम ही में बाक़ी रहे। तमाम मुकल्लफ़ लोगों पर लाज़िम है कि वह जानें कि अल्लाह तआला में यह कुदरत मौजूद है कि वह जो चाहे करे, और अपने इल्म और इख़्तियार के मुताबिक़ जो इरादा फ़रमाए उसे अंजाम दे। इसी तरह उन्हें यह भी जानना चाहिए कि इंसानों के पास एक महदूद कुदरत होती है, जिसके ज़रिये वह आम असबाब व ज़राए को इख़्तियार करते हुए वह चीज़ें हासिल करते हैं जो अल्लाह तआला ने उनके लिए मुक़द्दर की हैं। ताहम यह कुदरत उनकी अपनी पैदा की हुई नहीं होती, बल्कि अल्लाह तआला ही की अता की हुई होती है।
Allah singled out the attribute of power in this instance because He already mentioned the action which results from the threat and intimidation	अल्लाह तआला ने इस मक़ाम पर ख़ास तौर पर सिफ़त-ए-कुदरत का ज़िक़्र किया है, क्योंकि इससे पहले इन आयात में ऐसे फ़ेल का ज़िक़्र हो

contained in the āyahs, and so power is fitting here. Allah knows best.	चुका है जिसमें वर्ईद और डराने की बात पाई जाती है। इसलिए यहाँ कुदरत का ज़िक्र ज़्यादा मुनासिब और मौजू है। और अल्लाह तआला ही सबसे ज़्यादा जानने वाला है।
The āyahs up to this point form an introductory section to the Book of Allah. The first four describe the believers, the next two describe the unbelievers and the rest are about the hypocrites. This transmission was already mentioned from Ibn Jurayj. Mujāhid said that.	इस मक़ाम तक की आयात अल्लाह की किताब के लिए एक तमहीदी और तआरुफ़ी हिस्सा तश्कील देती हैं। पहली चार आयात मोमिनीन के औसाफ़ बयान करती हैं, इसके बाद की दो आयात काफ़िरों के बारे में हैं, और बाक़ी आयात मुनाफ़िक़ीन के अहवाल और सिफ़ात पर मुश्तमिल हैं। यह रिवायत इब्ने जुरैज से पहले भी नक़ल की जा चुकी है, और मुजाहिद रहिमहुल्लाह ने भी यही बात बयान की है।